सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
मूल्य ₹ 3/-
www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्षः 12 ● अंक 149 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 6 जुलाई, 2026

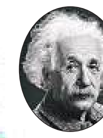

जिंदगी साइकिल चलाने की तरह है। अपना बैलेंस बनाए रखने के लिए आपको चलते रहना होता है।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

महिला टी20 विश्वकपमें ऑस्ट्रेलिया का... 7 | तमिलनाडु में नई सरकार पर अभी... 3 | भविष्यवाणी करने वाले पहले अपनी... 2

रामलला के दरबार में हिसाब की घड़ी

भरोसे की अग्निपरीक्षा

» महासचिव चंपत राय और सदस्य अनिल मिश्रा के इस्तीफे पर मंथन

» नित्य नये खुलासों से परेशान मंदिर ट्रस्ट, चढ़ावा नकदी और चांदी को लेकर लग रहे हैं गंभीर आरोप

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। अयोध्या आज सिर्फ एक धार्मिक नगरी नहीं बल्कि पूरे देश की नजरों का केंद्र बनी हुई है। करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का प्रतीक राम मंदिर आज पूजा अर्चना से ज्यादा जवाबदेही की बहस के कारण चर्चा में है। मंदिर परिसर में दोपहर तीन बजे से होने वाली श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की बैठक को लेकर राजनीतिक गलियारों से लेकर धार्मिक संगठनों तक बेचैनी साफ दिखाई दे रही है। वजह सिर्फ बैठक नहीं बल्कि वह आरोप हैं जिन्होंने राम मंदिर के चढ़ावे, नकदी, चांदी और दान के प्रबंधन को लेकर देशव्यापी बहस छेड़ दी है।

महासचिव चंपत राय और सदस्य अनिल मिश्रा के इस्तीफों की अटकलों ने इस बैठक को और भी संवेदनशील बना दिया है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसी स्थिति बनी कैसे कि रामलला के नाम पर दिए गए दान को लेकर सार्वजनिक जीवन में इतने तीखे आरोप सुनाई देने लगे? विपक्ष लगातार दान चोरी मामले में सवाल उठा रहा है जबकि ट्रस्ट और उससे जुड़े लोग इन आरोपों को सिरे से खारिज कर रहे हैं। विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष आलोक कुमार ने साफ कहा है कि यदि किसी के पास ठोस सबूत हैं तो वह जांच एजेंसियों को उपलब्ध कराए ताकि दोषियों को सजा मिले। उन्होंने विपक्ष द्वारा लगाए गए 20 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा गायब हैं के आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि हमें मिली जानकारी के मुताबिक इतनी रकम तो मिली ही नहीं थी। यह बयान केवल एक सफाई नहीं बल्कि पूरे विवाद के केंद्र में खड़े सबसे बड़े दावे का प्रतिवाद भी है। अब सवाल यह नहीं रह गया कि आरोप किसने लगाए और जवाब किसने दिया। असली सवाल यह है कि क्या आज की बैठक के बाद वह पारदर्शिता सामने आएगी जिसकी अपेक्षा करोड़ों श्रद्धालु कर रहे हैं? क्योंकि राम मंदिर किसी राजनीतिक दल संगठन या व्यक्ति की निजी विरासत नहीं है बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक है। इसलिए यदि आरोप निराधार हैं तो उन्हें तथ्यों के साथ खारिज किया जाना भी उतना ही जरूरी है और यदि कहीं कोई चूक हुई है तो उसकी निष्पक्ष जांच और जवाबदेही भी उतनी ही आवश्यक है। आज अयोध्या में होने वाली यह बैठक केवल एजेंडा और प्रस्तावों की बैठक नहीं है यह उस भरोसे की परीक्षा है जिसे देश ने रामलला के चरणों में समर्पित किया है। फैसले चाहे जो हों लेकिन आज का दिन इस बहस को नई दिशा अवश्य देगा।

सियासत गर्म कांग्रेस का हमला

राम मंदिर से जुड़े विवाद ने राजनीतिक तापमान भी बढ़ा दिया है। कांग्रेस इस मुद्दे को पारदर्शिता और जवाबदेही के सवाल से जोड़ रही है जबकि भाजपा और उससे जुड़े संगठन आरोपों को राजनीतिक अभियान करार दे रहे हैं। इसी बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने महाकाल से अयोध्या तक पदयात्रा और राम मंदिर निर्माण के लिए दिए गए अपने दान के उपयोग का हिसाब मांगने की घोषणा कर बहस को नया आयाम दे दिया है। उनका कहना है कि श्रद्धालुओं को यह जानने का अधिकार है कि उनकी ओर से दिया गया दान किस प्रकार उपयोग में लाया गया।

इतना चढ़ावा मिला ही नहीं जितने के आरोप

राम मंदिर के चढ़ावे और वित्तीय अनियमितताओं को लेकर छिड़ी बहस अब केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं रह गई है। विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष आलोक कुमार ने विपक्ष के उन आरोपों पर सीधी प्रतिक्रिया दी है जिनमें दावा किया गया कि 20 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा गायब हैं। आलोक कुमार ने इस दावे को खारिज करते हुए कहा है कि हमें मिली जानकारी के मुताबिक इतनी रकम तो मिली ही नहीं थी। उन्होंने कहा कि यदि किसी नेता या किसी भी व्यक्ति के पास आरोपों के समर्थन में ठोस साक्ष्य हैं तो उन्हें चल रही जांच में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इसी उद्देश्य से उन्होंने जांच अधिकारी को पत्र लिखकर उन नेताओं के बयानों की भी जांच करने की मांग की है जिन्होंने सार्वजनिक मंचों से वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगाए हैं। आलोक कुमार के अनुसार चूंकि यह प्रभावशाली सार्वजनिक पदों पर बैठे लोग हैं इसलिए यदि उन्होंने ऐसे आरोप लगाए हैं तो संभव है कि उनके पास कुछ तथ्य भी हों।

भाजपा और विहिप बोली साक्ष्य लांए

दूसरी ओर भाजपा और विहिप का कहना है कि यदि किसी के पास ठोस साक्ष्य हैं तो उन्हें जांच प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाए न कि केवल राजनीतिक मंचों पर आरोप लगाए जाएं। इसी टकराव ने इस पूरे विवाद को राष्ट्रीय स्तर की बहस बना दिया है। सोशल मीडिया से लेकर टीवी स्टूडियो तक एक ही सवाल गूंज रहा है कि क्या यह केवल राजनीतिक संघर्ष है या पारदर्शिता की वास्तविक मांग। राम मंदिर विश्वभर में करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है। इसलिए उससे जुड़ा हर विवाद देश की सीमाओं से बाहर भी चर्चा का विषय बनता है। प्रवासी भारतीय समुदाय अंतरराष्ट्रीय मीडिया और वैश्विक हिंदू संगठनों की भी इस घटनाक्रम पर नजर है। ऐसे में आज की ट्रस्ट बैठक का महत्व केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि प्रतीकात्मक भी है। यह बैठक इस बात का संकेत दे सकती है कि आस्था से जुड़े इतने बड़े संस्थान में उठे सवालों का उत्तर किस तरह दिया जाएगा और भविष्य में भरोसा और पारदर्शिता कैसे मजबूत की जाएगी।

सबंधित खबरें अंदर भी

भविष्यवाणी करने वाले पहले अपनी पार्टी का भविष्य देखें : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने सुभासपा चीफ के दावों को किया खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सुभासपा चीफ के दावों को सपा प्रमुख अखिलेश ने खारिज किया है। अखिलेश यादव ने न सिर्फ राजभर की बातों को खारिज किया, बल्कि बीजेपी के साथ उनकी राजनीतिक स्थिति पर भी सवाल उठाए। अखिलेश ने तंज कसते हुए कहा कि जो लोग भविष्यवाणी कर रहे हैं, उन्हें पहले अपनी पार्टी का भविष्य देखना चाहिए। उन्होंने सवाल किया कि बीजेपी आखिर सुभासपा को 75 सीटें दे रही है, 50 सीटें दे रही है या सिर्फ आश्वासन ही मिल रहा है। उनका इशारा साफ था कि गठबंधन में अपनी स्थिति मजबूत दिखाने के लिए बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं.

अखिलेश यादव ने एक और बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी गठबंधन में सुभासपा को 30 सीटें मिलने की अफवाह फैलाई गई. इसी भरोसे पर कई लोगों से एडवांस तक ले लिया गया और अब जब तस्वीर साफ नहीं हो रही है तो वे लोग अपने पैसे वापस मांग रहे हैं। हालांकि उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन उनका इशारा स्पष्ट रूप से ओम प्रकाश राजभर की ओर माना गया।

सपा प्रमुख ने बीजेपी पर विपक्षी दलों को कमजोर करने की राजनीति करने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि बीजेपी पहले भी कई राजनीतिक दलों में टूट करा चुकी है। समाजवादी पार्टी के विधायक, विधान परिषद सदस्य और राज्यसभा जाने वाले कई नेताओं को भी अलग-अलग समय पर अपने साथ मिलाया गया। उन्होंने कहा कि हर पार्टी में कुछ लोग लालच, दबाव या निजी स्वार्थ में फैसले लेते हैं, लेकिन इससे संगठन कमजोर नहीं होता। समाजवादी पार्टी पहले भी ऐसे दौर से निकली है और आगे भी मजबूती से मुकाबला करेगी।

ओम प्रकाश राजभर ने सुबह उठते ही भेजा सपा प्रमुख को गुड मॉर्निंग मैसेज

कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने एक्स पर पोस्ट कर लिखा-गुड मॉर्निंग अखिलेश जी, उठ जाइए, सुबह हो चुकी है। कितना सोयेंगे महाराज। अच्छा सुनिए, आज मैंने सपने में देखा कि आप चुनाव तक आराम की मुद्रा में ही रहने वाले हैं, यानी ऐसे ही सोए रहेंगे। सपने से याद आया कि दादरी की फ्लॉप रैली के बाद आपको समझ आ गया कि आपकी ज़मीन अब खोखली हो चुकी है। इसीलिए कोई रैली नहीं कर रहे हैं। आपके ही खासमखास लोग बता रहे हैं कि उस रैली का हश्र देखकर आप अब कोई दूसरी रैली करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं, आप निराश और हताश हो चुके हैं। सुभासपा चीफ ने कहा कि उठ जाइए महाराज हम तो आपके मित्र हैं। मित्रता की वजह से आपकी चिंता रहती है मुझे। सिर्फ यादव और मियां भाई के वोट से काम नहीं बनेगा मित्र। ना ट्विटर, एसी-पीसी काम करेगा, इसलिए उठ जाग मुसाफिर भोर भयो। बता दें कि ये पहली बार नहीं है जब कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने अखिलेश यादव पर देर से उठने और एसी कमरे में बैठकर राजनीति करने पर तंज कसा हो, अक्सर वो इन बातों को लेकर सपा मुखिया पर हमलावर रहते हैं। राजभर ने दावा किया कि चुनाव से पहले अगर वो इसी तरह एसी के कमरे में पीसी करते रहे तो चुनाव नहीं जीत पाएंगे।

बीजेपी के इशारे पर लगातार बयान दे रहे हैं राजभर

अखिलेश यादव ने दावा किया कि ओम प्रकाश राजभर अपनी ओर से नहीं, बल्कि बीजेपी के इशारे पर लगातार बयान दे रहे हैं। उनके मुताबिक बीजेपी जानबूझकर राजभर से सपा पर हमले करा रही है, ताकि भविष्य में उनकी राजनीतिक सौदेबाजी की ताकत खत्म हो जाए और उनके लिए दूसरे राजनीतिक विकल्प भी सीमित हो जाएं। कुछ दिन पहले अखिलेश यादव ने यह भी कहा था कि बीजेपी से मुकाबला करने के लिए डरने वाले नहीं, बल्कि लड़ने वाले लोगों की जरूरत है। उन्होंने साफ किया कि जो नेता लालच या दबाव में पार्टी छोड़ देते हैं, उन्हें लेकर समाजवादी पार्टी चिंतित नहीं है। पार्टी के पास संघर्ष करने वाले कार्यकर्ताओं और नेताओं की मजबूत टीम है, जो 27 के चुनाव के लिए पूरी तरह तैयार है।

अभी राजनीति से संन्यास नहीं अध्यापन कार्य से जुड़ी : प्रियंका

» संन्यास की चर्चा पर भड़कीं शिवसेना यूबीटी नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। प्रियंका चतुर्वेदी के राज्यसभा से रिटायर होने के बाद उन्होंने नए चरण की शुरुआत की है। प्रियंका चतुर्वेदी ने अपने सार्वजनिक जीवन के एक नए चरण का ऐलान किया कि वह सक्रिय राजनीति से आगे बढ़कर शिक्षा और नीति (पॉलिसी) के क्षेत्र में अपना काम का विस्तार करेंगी।

हालांकि उनके इस ऐलान के बाद तमाम तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं। कहा जा रहा है कि प्रियंका चतुर्वेदी ने राजनीति से संन्यास ले लिया। सोशल मीडिया पर तमाम तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं। लोगों ने उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया। किसी ने कहा कि अब राजनीति में प्रियंका चतुर्वेदी को कोई पूछ नहीं रहा इसलिए उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा है। हालांकि प्रियंका चतुर्वेदी ने ट्रोलर्स को जवाब देते हुए कहा है कि उन्होंने राजनीति से संन्यास नहीं लिया है। एक यूजर ने लिखा कि प्रियंका चतुर्वेदी ने राजनीति से संन्यास ले लिया है। उन्होंने कहा देशसेवा के लिए राजनीति ही रास्ता नहीं है। राज्यसभा से मुक्त हो कर जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में पढ़ाना शुरू किया है। संसद में इनकी कमी खलेगी। कोई दल इन्हे बुला नहीं रहा या किसी दल में ये जाना नहीं चाहती ये तो प्रियंका जी जाने! प्रियंका चतुर्वेदी ने इस पोस्ट का जवाब देते हुए लिखा, राजनीति से संन्यास?!! सपनें में ! 20 साल की मेहनत और अपनी बलबूते पर बनाई जगह से रिटायरमेंट तो दूर की बात है, राजनीति में लड़ाई जारी रहेगी। पार्लियामेंट में बने रहने की होड़ जो आज कल का फ्लेवर है उस के विपरीत अपनी जगह भारत के विकास में बरकरार रखने में मेरी कोशिश है। और हां उन सभी लोगों के मुंह पर थप्पड़ है जो लगातार सिर्फ गंध मचा रहे थे मेरे बारे में।

भाजपा विधायक और सपा सांसद में जुबानी जंग छिड़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा की अंदरूनी कलह में भाजपा में एंट्री के बाद अब कुंदरकी से भाजपा विधायक रामवीर और सपा सांसद रुचि वीरा में जुबानी जंग छिड़ गई है। दोनों एक दूसरे की जीत पर आरोप लगा रहे हैं और अगले चुनाव में एक-दूसरे को आटे-दाल का भाव पता चलने का दावा कर रहे हैं। विधायक रामवीर ने बयान दिया है कि सांसद राजघराने से आती हैं। पैसे के दम पर उन्हें 15 दिन में टिकट मिल गया और चुनाव भी जीत गईं।

वहीं कमाल अख्तर और रुचि वीरा के विवाद पर उन्होंने कहा कि कमाल अख्तर सपा के पुराने नेता हैं। जब वह राज्य सभा गए थे, तब रुचि वीरा ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि वह सांसद बनेंगी। पिछला चुनाव उन्होंने किसी तरह जीत लिया, इस बार मेरिट के आधार पर चुनाव होगा तो आटे-दाल का भाव पता चल जाएगा। रामवीर ने कहा कि वह 30 साल से कुंदरकी क्षेत्र में मेहनत कर रहे हैं, इसका परिणाम जनता ने उन्हें उपचुनाव में दिया। इस पर पलटवार करते हुए रुचि वीरा ने कहा कि भाजपा विधायकों को उनकी लोकप्रियता से जलन होती है। सांसद ने कहा कि मैं अचानक सांसद नहीं बनी हूं, इससे पहले दो बार जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी हूं। अपने ससुर के विषय में कहा कि वह विधायक और मंत्री रह चुके हैं। राजनीति में कोई भी एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही आगे बढ़ता है। जनता जानती है कि कुंदरकी का उपचुनाव खुली लूट का परिणाम है। प्रशासनिक मशीनरी के बल पर भाजपा ने चुनाव जीता।

रामराज बीजेपी के सिर्फ भाषणों में है : हरेंद्र मलिक

» राम मंदिर चढ़ावा गबन पर सपा सांसद का भाजपा पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुजफ्फरनगर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं मुजफ्फरनगर सांसद हरेंद्र मलिक ने श्री राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले को लेकर केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर तीखा हमला बोला। रविवार को सपा कार्यालय में आयोजित स्वागत समारोह के दौरान मीडिया से बातचीत में उन्होंने कथित चढ़ावा चोरी प्रकरण की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच की मांग करते हुए कहा कि जिस व्यवस्था की निगरानी स्वयं प्रधानमंत्री कर रहे थे, यदि उसमें भी चोरी के आरोप सामने आते हैं तो यह बेहद गंभीर मामला है।हरेंद्र मलिक ने कहा कि राम मंदिर निर्माण और चढ़ावे के लिए देशभर के करोड़ों श्रद्धालुओं ने अपनी श्रद्धा से दान दिया।

किसी ने नकद सहयोग किया तो किसी ने सोना, चांदी और आभूषण तक दान किए। ऐसे में यदि चढ़ावे के प्रबंधन पर सवाल उठ रहे हैं तो इसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। हरेंद्र मलिक ने कहा कि भाजपा ने दावा किया था कि राम मंदिर बनने के बाद रामराज स्थापित होगा, लेकिन आज हालात इसके उलट हैं। उन्होंने कहा, रामराज में लोग खुले दरवाजे सोते थे, चोरी नहीं होती थी। यहां तो ऐसी चोरी हुई कि घर ही उखाड़ लिया गया।

निष्पक्ष जांच होनी चाहिए

सपा सांसद ने कहा कि पूरे मामले की स्वतंत्र और पारदर्शी जांच होनी चाहिए ताकि सच्चाई सामने आ सके और करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था बनी रहे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि देश में विभिन्न स्तरों पर अनियमितताओं के आरोप सामने आते रहे हैं और इस मामले की भी गहन जांच आवश्यक है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह कोई एक दिन की घटना नहीं बल्कि लंबे समय से चल रही प्रक्रिया प्रतीत होती है। मलिक ने कहा कि यदि कम आय वाला व्यक्ति करोड़ों की संपत्ति बना ले और किसी स्तर पर कोई आपत्ति न हो तो यह जांच का विषय है। उन्होंने आरोप लगाया कि यदि लंबे समय तक चोरी होती रही तो जिम्मेदार लोगों की भूमिका की भी जांच होनी चाहिए।

भाजपा का दावा- टिन्नू यादव की अखिलेश यादव से हुई थी फोन पर बातचीत

बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अजय आलोक ने दावा किया कि राम जन्मभूमि मंदिर गबन मामले के आरोपियों में शामिल रामाशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव की समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव से कई बार फोन पर बातचीत हुई थी. उन्होंने कहा, समाजवादी पार्टी की सच्चाई धीरे-धीरे सामने आ रही है. यह भी सामने आ रहा है कि टिन्नू यादव की अखिलेश यादव से कई बार फोन पर बात हुई थी जैसे-जैसे इस मामले की परतें खुलेंगी, देश को पता चल जाएगा कि इन चोरी की घटनाओं के पीछे कौन लोग थे। अजय आलोक ने कहा कि इस मामले में अभी कई और तथ्य सामने आने बाकी हैं। उन्होंने कहा, समाजवादी पार्टी पहले भी संतों और महात्माओं के आक्रोश को नहीं झेल पाई थी और आगे भी नहीं झेल पाएगी।

न मंदिर सुरक्षित न मस्जिद न देश

सपा सांसद ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि विपक्ष सवाल उठाता है तो उसे निशाना बनाया जाता है, जबकि असली मुद्दों से ध्यान भटकाया जाता है। उन्होंने कहा, हम पहले से कहते रहे हैं कि इनके हाथ में न मंदिर सुरक्षित है, न मस्जिद, न देश सुरक्षित है और न ही विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा सुरक्षित है।

चिराग पासवान के प्लान से भाजपा हुई परेशान

» यूपी विस चुनाव में लोजपा-रामविलास सारी सीटों पर हाथ आजमाएगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने उत्तर प्रदेश में अपने संगठन के विस्तार की दिशा में बड़ा कदम बढ़ाया है। पार्टी नेता रामविलास चौहान के जन्मदिन के अवसर पर लखनऊ में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के जरिए पार्टी ने साफ संकेत दिया कि अब उसका फोकस उत्तर प्रदेश में संगठन को मजबूत करने पर है।

कार्यक्रम में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान भी मौजूद रहे। इसे यूपी की राजनीति में उनकी सक्रिय एंट्री के तौर पर देखा जा रहा है। इस मौके पर चिराग पासवान ने कहा कि उनकी पार्टी 027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए राज्य की सभी 403 विधानसभा सीटों पर संगठनात्मक तैयारी करेगी। हालांकि, चुनाव गठबंधन में लड़ना है या नहीं, इस पर अंतिम फैसला संगठन की समीक्षा और प्रदेश इकाई के प्रस्ताव के बाद केंद्रीय संसदीय बोर्ड करेगा। चिराग पासवान ने कहा कि उत्तर प्रदेश उनके पिता और पार्टी के संस्थापक रामविलास पासवान के दिल के बेहद करीब था, उन्होंने कहा कि रामविलास पासवान की सोच जातीयता और सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर विकास की राजनीति करने की थी।

उन्होंने कहा कि उनके निधन के बाद पार्टी कुछ समय तक अपने आंतरिक उतार-चढ़ाव में उलझी रही, जिससे संगठन का विस्तार प्रभावित हुआ. अब पार्टी नई ऊर्जा और नई सोच के साथ उत्तर प्रदेश में अपना आधार मजबूत करने के अभियान में जुटी है। बिहार के राजनीतिक दलों की उत्तर प्रदेश में बढ़ती सक्रि यता पर चिराग पासवान ने कहा कि लोकतंत्र की खूबसूरती ही यही है कि जनता के सामने जितने अधिक विकल्प होंगे, लोकतंत्र उतना ही मजबूत होगा, उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता तय करेगी कि उसे किस दल पर भरोसा करना है और हर राजनीतिक दल को अपनी बात रखने का पूरा अधिकार है। 403 सीटों पर चुनाव लड़ने के सवाल पर चिराग पासवान ने कहा कि किसी भी राजनीतिक दल को हर सीट पर तैयारी करनी चाहिए,उन्होंने कहा कि केवल संभावित सीटों तक तैयारी सीमित रखना उचित नहीं होगा।

तमिलनाडु में नई सरकार पर अभी से होने लगे प्रहार

परंपरागत राजनीति से अलग चल रही बयार

डीएमके बोली- जल्द गिर जाएगी टीवीके सरकार

» टीवीके ने कहा- विपक्ष कर रहा साजिश

» सरकार क्या सचमुच 3-6 महीने में गिर जायेगी? चर्चा जोरों पर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु में नई सरकार बने एक महीने हो गए हैं। अभी टीवीके सरकार ठीक से चलना भी नहीं शुरू हो पाई उसे गिराने व गिरने की बातें होने लगी हैं। टीवीके के विधायक कह रहे उन्हें विपक्षी पार्टी की ओर सरकार के खिलाफ समर्थन करने को रुपये के लालच दिए जा रहे हैं। तो वहीं विपक्षी पार्टी डीएमके कह रही सरकार के अंदर कई लोग असंतुष्ट है। साथ ही उसका दावा है कि राज्य में कानून व्यवस्था बिगड़ती जा रही है और सीएम विजय सरकार चला नहीं पा रहे हैं।

दरअसल पूरा विवाद उस समय शुरू हुआ जब तमिलगा वेत्रि कषगम- टीवीके के उथंगरै विधायक एन इलैयाराजा ने चेन्नै पुलिस आयुक्त से शिकायत दर्ज कराई। विधायक ने आरोप लगाया कि तिरुनावुक्करासु नामक व्यक्ति ने उनसे संपर्क किया और खुद को एक राजनीतिक सलाहकार संस्था से जुड़ा बताया। तमिलनाडु की राजनीति में इन दिनों सत्ता और विपक्ष के बीच टकराव अपने चरम पर पहुंच गया है। सत्तारुढ़ तमिलगा वेत्रि कषगम और विपक्षी द्रविड मुनेत्र कषगम के बीच विधायकों की खरीद फरोख्त, सरकार गिराने की साजिश और दल बदल को लेकर आरोप प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। इसी बीच द्रमुक प्रमुख एमके स्टालिन ने यह कहकर राजनीतिक माहौल को और गर्म कर दिया कि विजय की सरकार कभी भी गिर सकती है और राज्य में जल्द ही दोबारा चुनाव हो सकते हैं। दूसरी ओर सत्तारुढ़ दल टीवीके ने द्रमुक पर धनबल के जरिए विधायकों को तोड़कर सरकार अस्थिर करने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। पूरे घटनाक्रम ने तमिलनाडु की राजनीति में अस्थिरता, अविश्वास और सत्ता संघर्ष का नया दौर शुरू कर दिया है।

टीवीके विधायक की शिकायत के बाद विवाद गहराया

हम आपको बता दें कि पूरा विवाद उस समय शुरू हुआ जब तमिलगा वेत्रि कषगम के उथंगरै विधायक एन इलैयाराजा ने चेन्नै पुलिस आयुक्त से शिकायत दर्ज कराई। विधायक ने आरोप लगाया कि तिरुनावुक्करासु नामक व्यक्ति ने उनसे संपर्क किया और खुद को एक राजनीतिक सलाहकार संस्था से जुड़ा बताया। विधायक के अनुसार आरोपी ने दावा किया कि विधानसभा में जल्द ही विधानसभा अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाएगा और उसमें समर्थन देने के बदले उन्हें पैंतीस करोड़ रुपये की पेशकश की गई। विधायक ने यह भी आरोप लगाया कि प्रस्ताव ठुकराने पर उन्हें और उनके परिवार को धमकी दी गई। शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर तीन लोगों को गिरफ्तार किया, जिनमें तिरुनावुक्करासु, त्रिचि के नरेश और चेन्नै के त्यागराजन शामिल हैं।

विफलताओं को छिपाने के लिए झूठे आरोप लगा रही टीवीके : डीएमके

दूसरी ओर द्रमुक ने इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है। द्रमुक नेताओं ने कहा कि तमिलगा वेत्रि कषगम अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए झूठे आरोप लगा रही है। द्रमुक संगठन सचिव आरएस भारती ने राज्यपाल आरवी आर्लेकर को शिकायत देकर मुख्यमंत्री विजय पर दो विपक्षी विधायकों को तोड़ने की कोशिश का आरोप लगाया है। यह दोनों विधायक मरुमलार्चि द्रविड मुनेत्र कषगम से संबंधित है, जिन्होंने चुनाव द्रमुक के चुनाव चिन्ह पर जीता था। भारती ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री विजय ने इन

विधायकों को इस्तीफा देने और बाद के उपचुनाव में दोबारा जीत दिलाने का आश्वासन दिया था। साथ ही आर्थिक सहायता का भी वादा किया गया। द्रमुक ने इस पूरे मामले की सतर्कता और भ्रष्टाचार निरोधक विभाग से जांच कराने की मांग की है।

द्रमुक नेता वी सेंथिल बालाजी के भाई वी अशोक कुमार से जुड़ रहे तार

पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपी नरेश ने हाल ही में द्रमुक नेता वी सेंथिल बालाजी के भाई वी अशोक कुमार से मुलाकात की थी। प्रारंभिक जांच के आधार पर पुलिस ने दावा किया कि विधायक से संपर्क सेंथिल बालाजी और अशोक कुमार के निर्देश पर किया गया था। इसके बाद सत्तारुढ़ दल ने द्रमुक पर सरकार गिराने की साजिश रचने का आरोप तेज कर दिया। राज्य के मंत्री आर निर्मल कुमार ने कहा कि पिछले चालीस दिनों से द्रमुक लगातार तमिलगा वेत्रि कषगम के विधायकों को तोड़ने की कोशिश कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ विधायकों को पचास करोड़ रुपये तक की पेशकश की गई और पूरी योजना विपक्षी नेताओं के इशारे पर चल रही थी।

स्टालिन के हालिया बयान से भी घामसान

इसके अलावा द्रमुक प्रमुख एमके स्टालिन के हालिया बयान ने भी तमिलनाडु की राजनीति को और अधिक गर्मा दिया है। चेन्नई में आयोजित एक कार्यक्रम में स्टालिन ने दावा किया कि तमिलगा वेत्रि कषगम की सरकार एक कमजोर अल्पमत सरकार है, जो केवल सहयोगी दलों के सहारे चल रही है। उन्होंने कहा कि सरकार के पास अपने दम पर बहुमत नहीं है और यह किसी भी समय गिर सकती है। स्टालिन ने यहां तक कहा कि राज्य में तीन महीने या छह महीने के भीतर फिर से चुनाव हो सकते हैं। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से

तुरंत चुनावी मोड़ में आने का आह्वान किया। स्टालिन ने मुख्यमंत्री विजय की सरकार पर विकास कार्यों में सुस्ती, कानून व्यवस्था की गिरती स्थिति, बिजली संकट और निवेशकों के राज्य से बाहर जाने जैसे आरोप भी लगाए। वहीं विपक्ष के नेता उदयनिधि स्टालिन ने भी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जनता अब पुराने शासन को याद कर रही है और वर्तमान सरकार केवल दिखावे की राजनीति में लगी हुई है। इन बयानों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विपक्ष अब केवल आरोप प्रत्यारोप तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि समय से पहले चुनाव की संभावनाओं को भी राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।

लोकतांत्रिक जनादेश के खिलाफ षड्यंत्र की जा रही : टीवीके

तमिलगा वेत्रि कषगम ने इसे लोकतांत्रिक जनादेश के खिलाफ षड्यंत्र करार दिया। पार्टी का कहना है कि चुनाव में जनता ने जिस सरकार को चुना है, उसे अस्थिर करने की कोशिश हो रही है। पार्टी नेताओं का आरोप है कि विपक्ष विधानसभा में संख्या बल हासिल करने के लिए धनबल और दबाव की राजनीति कर रहा है। पार्टी ने यह भी दावा किया कि केवल एक विधायक ही नहीं बल्कि कई अन्य विधायकों से भी संपर्क साधा गया था।

एआईडीएमके ने भी टीवीके को घेरा

उधर, इस विवाद में अखिल भारतीय अन्ना द्रविड मुनेत्र कषगम भी कूद पड़ी है। पार्टी प्रमुख एडप्पडी के. पलानीस्वामी ने आरोप लगाया कि तमिलगा वेत्रि कषगम खुद अन्य दलों के विधायकों को अपने पक्ष में लाने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि जनता के मुद्दों से ध्यान हटाकर सभी दल केवल राजनीतिक गणित में लगे हुए हैं। वहीं कांग्रेस और विदुथलाई चिरुथैगल कषगम जैसे सहयोगी दलों ने सरकार का समर्थन करते हुए द्रमुक पर जनादेश का अनादर करने का आरोप लगाया है। देखा जाये तो राजनीतिक दृष्टि से यह घटनाक्रम तमिलनाडु की राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा रहा है। अभिनेता से नेता बने मुख्यमंत्री विजय की सरकार अभी नई है और विपक्ष लगातार उसकी स्थिरता पर सवाल उठा रहा है। ऐसे समय में विधायकों की खरीद फरोख्त के

आरोप यह संकेत देते हैं कि राज्य में राजनीतिक ध्रुवीकरण तेजी से बढ़ रहा है। यदि जांच में आरोप सही साबित होते हैं तो इससे द्रमुक की छवि को गंभीर नुकसान पहुंच सकता है। दूसरी ओर यदि आरोप राजनीतिक हथकंडा साबित होते हैं तो सरकार की विश्वसनीयता पर भी प्रश्न उठेंगे। बहरहाल, यह पूरा प्रकरण इस बात का भी संकेत है कि तमिलनाडु की राजनीति अब परंपरागत द्रमुक और अन्नाद्रमुक की सीमाओं से आगे निकल चुकी है। तमिलगा वेत्रि कषगम के उभार ने राज्य की राजनीतिक संरचना को बदल दिया है। नई सत्ता व्यवस्था में दल बदल, गठबंधन राजनीति और विधायकों की निष्ठा को लेकर संघर्ष बढ़ता दिखाई दे रहा है। आने वाले दिनों में पुलिस जांच, राजनीतिक बयानबाजी और विधानसभा की गतिविधियां इस विवाद को और अधिक गहरा सकती हैं। फिलहाल तमिलनाडु की राजनीति में सत्ता बचाने और सत्ता पाने की जंग खुलकर सामने आ चुकी है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

प्लास्टिक से मुक्ति के लिए गंभीर हों प्रयास

> यह प्रश्न हम सभी से पूछता है कि क्या पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी कार्यक्रम रहेगा, या शासन, प्रशासन और समाज मिलकर इसे जन-आंदोलन बनाएँगे? लोकतंत्र में जिम्मेदारी साझा होती है, और सफलता भी तभी संभव है जब जवाबदेही केवल कागज़ों तक सीमित न रहकर व्यवहार में दिखाई दे।

पूरी दुनिया अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस मना रही है। पर क्या वाकई हम उस प्लास्टिक रुपी राक्षस से मुक्त हो गए हैं। कम से कम भारत में अब ये प्लास्टिक अब भी हजारों जाने ले रहा है। हमारी सरकारें एक कार्यक्रम करके इससे अलग हो जाती हैं। जबकि इस जानलेवा वस्तु पर्यावरण छिन्न-भिन्न हो रहा है। इसलिए ये दिवस केवल एक प्रतीकात्मक अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का दिन है। यह प्रश्न हम सभी से पूछता है कि क्या पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी कार्यक्रम रहेगा, या शासन, प्रशासन और समाज मिलकर इसे जन-आंदोलन बनाएँगे? लोकतंत्र में जिम्मेदारी साझा होती है, और सफलता भी तभी संभव है जब जवाबदेही केवल कागजों तक सीमित न रहकर व्यवहार में दिखाई दे। हर वर्ष 3 जुलाई को अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य एकल-उपयोग (सिंगल-यूज) प्लास्टिक बैग के दुष्प्रभावों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना और पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को प्रोत्साहित करना है। भारत में भी प्लास्टिक पर नियंत्रण के लिए कानून बनाए गए, प्रतिबंध लागू हुए और समय-समय पर विशेष अभियान चलाए गए।

इसके बावजूद आज भी अधिकांश बाजारों में प्रतिबंधित प्लास्टिक बैग खुलेआम बिकते और उपयोग होते दिखाई देते हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जब कानून मौजूद हैं, तब उनका प्रभावी पालन क्यों नहीं हो पा रहा? यदि प्रशासन केवल छापेमारी और जुर्माने तक सीमित रह जाए, जबकि प्रतिबंधित प्लास्टिक का उत्पादन, आपूर्ति और बिक्री निर्बाध चलती रहे, तो अभियान का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। कई स्थानों पर यह आरोप भी सुनने को मिलता है कि नियमों के निष्पक्ष पालन के बजाय अवैध वसूली की प्रवृत्ति पनप जाती है। यदि ऐसा कहीं होता है, तो यह केवल भ्रष्टाचार का प्रश्न नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के पूरे अभियान की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न है। हालांकि ऐसे आरोपों की निष्पक्ष जांच और तथ्यात्मक पुष्टि आवश्यक है; क्योंकि अबतक मौखिक बातें बाजार में उड़ती रहती हैं, इसलिए बिना प्रमाण किसी संस्था या अधिकारी पर आरोप लगाना उचित नहीं होगा। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जवाबदेही बहुस्तरीय होती है। नीति बनाना सरकार की जिम्मेदारी है, उसका निष्पक्ष क्रियान्वयन प्रशासन का दायित्व है, कानून की निगरानी न्यायपालिका और स्वतंत्र संस्थाओं की भूमिका का हिस्सा है, जबकि जनप्रतिनिधियों और नागरिक समाज का दायित्व है कि वे पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए निरंतर आवाज उठाएँ। नागरिकों की भी जिम्मेदारी कम नहीं है। सरकारी अभियान पर्याप्त नहीं होंगे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सवाल नैतिकता और जवाबदेही का भी है

विश्वनाथ सचदेव

यह सही है कि 'कॉकरोच पार्टी' द्वारा चलाये जा रहे देश के शिक्षामंत्री-विरोधी अभियान में दिल्ली के जंतर-मंतर में उतने युवा इकट्ठा नहीं हो रहे, जितनों की आयोजकों को आशा थी, पर सही यह भी है कि देश के युवाओं के संदर्भ में इस अभियान को पूरी तरह खारिज भी नहीं किया जा सकता। युवा देश के शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा मांग रहे हैं। उनका कहना है कि 'नीट' और 'सीबीएससी' जैसी परीक्षाओं में हो रही धांधली शिक्षामंत्री की असफलता का प्रतीक है। 'नीट' की परीक्षा के संदर्भ में देश के पंद्रह से अधिक युवाओं द्वारा की गई आत्महत्याएं निश्चित रूप से एक गंभीर मसला है और इस बारे में सरकार की लगभग चुप्पी पर सवाल उठने ही चाहिए। सवाल उठ भी रहे हैं, पर जिन्हें जवाब देने हैं वे बचाव के रास्ते खोज रहे हैं। ऐसा ही एक रास्ता शिक्षामंत्री ने खोजा है।

जून 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने विपक्ष द्वारा चलाये जा रहे आंदोलन से बचाव के लिए देश में आपातकाल लागू करने का रास्ता खोजा था। बावजूद इसके कि कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने यह दावा किया था कि उसका यह कदम देश के संविधान द्वारा दिये गये अधिकार के अनुकूल था, आपातकाल लागू करने की यह कार्रवाई देश के नागरिकों के अधिकारों का हनन करने वाली थी। देश के शानदार जनतांत्रिक इतिहास का एक काला अध्याय था यह। तत्कालीन सरकार द्वारा अपने उठाये गये इस कदम के बचाव में बहुत कुछ कहा गया था, पर इसका औचित्य सिद्ध करने का कोई प्रयास सफल नहीं हुआ। हो भी नहीं सकता था। स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भी अपनी गलती का अहसास हो गया था। आपातकाल लागू करने के इक्कीस महीने बाद, मार्च 1977 में उन्होंने अपना उठाया गया कदम वापस ले लिया। उन्होंने अपनी गलती स्वीकारी भी थी। कांग्रेस के अब के नेता, राहुल गांधी ने भी उस घटना के लगभग पचास साल बाद, 2021 में, आपातकाल लागू करने को 'गलती' मानकर खेद व्यक्त किया था। लेकिन इस स्वीकारोक्ति के बाद भी यह कलंक तो कांग्रेस के माथे पर लगा ही रहा कि उसने आपातकाल लागू करके एक जनतंत्र-विरोधी कार्रवाई की थी।

कांग्रेस के विरोधी दल, विशेषकर भारतीय जनता पार्टी, अक्सर कांग्रेस के इस 'काले कारनामे' का राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करते रहे हैं। अपने बचाव में कांग्रेस इस 'गलती' को भुला देने की बात कहती रही है। पर कांग्रेस-विरोधी इसे एक हथियार की तरह काम

में लेते रहे हैं। हाल ही में शिक्षा मंत्री ने आपातकाल की बरसी के अवसर पर, इस हथियार को अपने बचाव का साधन बनाने की कोशिश की है। अपने खिलाफ चल रहे 'शिक्षा मंत्री इस्तीफा दो' आंदोलन की आलोचना करते हुए उन्होंने कांग्रेस को 'जनतंत्र-विरोधी' बताकर अपना बचाव किया है। इसी संदर्भ में 'एनसीईआरटी' की किताबों में आपातकाल के बारे में जोड़े गये अध्याय का बचाव करते हुए उन्होंने कहा कि देश के युवाओं को, और भावी पीढ़ियों को, आपातकाल की जानकारी देना जरूरी है। अब पहली बार कक्षा नौ की सामाजिक विज्ञान की किताब में इसे 'भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रमुख चुनौतियों' के रूप में शामिल किया गया है। हालांकि 12वीं की किताब में पहले ही यह विषय जोड़ा जा चुका था, और जब यह जोड़ा गया तब सत्ता में कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार थी। ऐसे में इस विषय को उठाकर शिक्षामंत्री आखिर क्या पाना चाहते हैं? शायद 'नीट' की परीक्षा में हुई धांधली को लेकर हो रही अपनी आलोचना से ध्यान बंटाने की एक कोशिश हो यह। शायद उन्हें लग रहा हो कि इस तरह ध्यान बंटा कर वे अपना कुछ बचाव करने में सफल हो सकते हैं! 'एनसीईआरटी' की नौवीं कक्षा की किताबों में भी आपातकाल का अध्याय जोड़ने का बचाव करते हुए शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा है कि यह निर्णय इसलिए लिया गया है ताकि आगे आने वाली पीढ़ियां यह जान और समझ सकें कि ऐसा कोई काला अध्याय कभी लिखा गया था। भविष्य में ऐसा कुछ न हो इसके लिए आज के विद्यार्थियों को यह पढ़ाया जाना जरूरी है। निश्चित रूप से भावी पीढ़ियों को ऐसी बातों का पता होना चाहिए। 'एनसीईआरटी' की किताब में ऐसे अध्याय का होना कतई गलत नहीं है। गलत यह है कि ध्यान बंटाने के साधन के रूप में इसका इस्तेमाल किया जा रहा है।

'नीट' और 'सीबीएससी' की परीक्षाओं में हो रही धांधली की जांच की दुहाई दी जा रही है। दोषियों को बख्शा नहीं जायेगा, इसका आश्वासन दिया जा रहा है। लेकिन सवाल किसी के जिम्मेदारी लेने का भी है। सवाल नैतिकता का भी है। नैतिकता का तकाजा है कि पर्चों की गड़बड़ी के चलते हुई आत्महत्याओं की जिम्मेदारी कोई तो ले। सन 21 से लेकर 26 के बीच इस संदर्भ में 93 छात्रों की आत्महत्याओं के मामले सामने आये हैं। इसी वर्ष, यानी 26 में, कम से कम चौदह छात्रों ने अपनी जान गंवाई है। आखिर कोई तो जिम्मेदार होगा इन घटनाओं के लिए।

दुनिया की छत से इलेक्ट्रॉनिक युद्ध की तैयारी

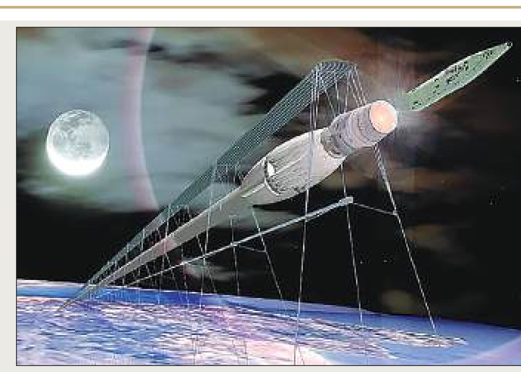

पुष्परंजन

जो तिब्बत 'दुनिया की छत' के नाम से मशहूर था, अब चीन उसे इलेक्ट्रो मैग्नेटिक मार्ग वाले रॉकेट लॉन्चिंग अधिकेंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है। पेइचिंग इंस्टिच्यूट ऑफ स्पेस साइंस के अंतरिक्ष विज्ञानी यू थांग ने पिछले हफ्ते कहा, 'चीन की स्पेस इंडस्ट्री के कुछ बहुत ही साहसी और होनहार युवाओं ने दो दशक से भी ज्यादा समय पहले शिंगहाई-तिब्बत पठार के ऊंचाई वाले और कम हवा वाले इलाकों में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक लॉन्च ऑर्बिट बनाने का आइडिया दिया था। अब वो साकार हो रहा है।' इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रॉकेट लॉन्च टेक्नोलॉजी, एक क्रांतिकारी अंतरिक्ष प्रक्षेपण प्रणाली है, जो पारंपरिक केमिकल, ईंधन के बजाय शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्रों (मैग्नेटिक फील्ड) का उपयोग करके रॉकेट या पेलोड को अंतरिक्ष में लॉन्च करती है।

यह तकनीक लक्ष्य तक पहुंचने में सटीक है, और अंतरिक्ष यात्रा की लागत को काफी हद तक कम करने की क्षमता रखती है। इस प्रणाली में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ट्रैक (विद्युत चुम्बकीय पटरियों) का उपयोग किया जाता है, जो विद्युत ऊर्जा को गतिज ऊर्जा (कायनेटिक एनर्जी) में बदलती हैं। एक बार आवश्यक गति प्राप्त करने के बाद, पेलोड या छोटा रॉकेट वातावरण में ऊपर की ओर छूट जाता है, और अंतरिक्ष के लिए अपनी यात्रा जारी रखता है। इससे भारी मात्रा में ईंधन की बचत होती है। इसे ध्यान में रखें कि पारंपरिक रॉकेटों के कुल वजन का 80-90 प्रतिशत हिस्सा केवल ईंधन होता है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक लॉन्चर इस ईंधन के भार को खत्म कर देते हैं, जिससे रॉकेट बहुत अधिक पेलोड (उपग्रह या उपकरण) ले जा सकते हैं। यह तकनीक अंतरिक्ष यान को पारंपरिक केमिकल इंजनों की तुलना में कहीं अधिक गति देती है। इससे मंगल ग्रह की यात्रा का समय 8-9 महीने से घटकर केवल 30-60 दिन होने का दावा किया जा रहा है। यह 300 किलोवाट तक की शक्ति पर काम करता है, और हाइड्रोजन के आवेशित कणों (प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन) को 100 किलोमीटर प्रति सेकंड की आश्चर्यजनक गति प्रदान करता है। भारत में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक (विद्युत-चुंबकीय) रॉकेट लॉन्च तकनीक अभी भी शुरुआती अनुसंधान और विकास के चरण में है।

भारत में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक एयरक्राफ्ट लॉन्च सिस्टम (ईएमएएलएस) चीन से काफी पीछे है। चीन फुजियान (टाइप 003) विमान वाहक पर अपने विद्युत चुम्बकीय कैटापुल्ट को सफलतापूर्वक चालू कर चुका है, अमेरिका के बाद ऐसा करने वाला वह दुनिया का दूसरा देश है। पीपल्स लिबरेशन आर्मी की ग्राउंड फोर्स रिसर्च इंस्टिट्यूट में तैनात प्रोफेसर हान ने इसे दुनिया में अपनी तरह का पहला प्रोजेक्ट बताया, और कहा कि यह पूर्व निर्धारित योजना के मुताबिक बड़ी सफलताओं के साथ लगातार चल रहा है। हान ने '4,000 मीटर (13,123 फुट) से ज्यादा ऊंचे पठार से सीधे डेटा इकट्ठा किया है। उन्होंने इस पर अनुसंधान किया है कि रॉकेट को ज्यादा ऊंचाई वाले माहौल के लिए कैसे ऑप्टिमाइज किया जाए, जहां सर्दियों में तापमान बहुत कम होता है, जिससे हवा का दबाव कम होता है।

यह समुद्र तल के प्रेशर का लगभग आधा हो सकता है। इसका मतलब है उड़ान के दौरान हवा का घर्षण कम होता है, और शायद रेंज भी ज्यादा होती है, खासकर तिब्बत जैसे दुनिया की छत पर रॉकेट को और भी ज्यादा पावरफुल हथियार बना देगा।' जियांग चीन के पूर्वी सिचुआन प्रांत का शहर है। 2026 की शुरुआत में जियांग में हाई-टेम्परेचर सुपरकंडक्टिंग नेविगेशन सिस्टम के सफल परीक्षण ने इस टेक्नोलॉजी को हकीकत के करीब ला दिया है। इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व 'जियांग कमर्शियल एयरोस्पेस लॉन्च टेक्नोलॉजी रिसर्च इंस्टिट्यूट' के शोधार्थी कर रहे हैं, जो चाइना एयरोस्पेस साइंस एंड इंडस्ट्री कॉरपोरेशन की एक शाखा है। तकनीकी सफलताओं के बावजूद, अभी भी इंजीनियरिंग से जुड़ी बड़ी चुनौतियां बाकी हैं। जियांग फैसिलिटी चीन के पहले इलेक्ट्रोमैग्नेटिक लॉन्च वेरिफिकेशन प्लेटफॉर्म को सक्रिय रूप से चला रही है, जिसका महत्वाकांक्षी लक्ष्य 2028 तक 'इसरो' की तरह व्यावसायिक लांच वाले पैटर्न पर लाना है। अब सवाल है, क्या चीन इस तकनीक का सैन्य इस्तेमाल भी करने के प्रयास में है? चीन विद्युत-चुंबकीय तकनीक का इस्तेमाल मिसाइल और रॉकेट लॉन्चिंग के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में आक्रामक रूप से कर रहा है।

पारंपरिक रासायनिक ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए, चीन इस तकनीक को जीरो-स्टेज बूस्टर के रूप में विकसित कर रहा है। चीन की जियांग कमर्शियल एयरोस्पेस लॉन्च टेक्नोलॉजी रिसर्च इंस्टिट्यूट एक ऐसे सुपरकंडक्टिंग मैग्नेटिक लेविटेशन सिस्टम पर काम कर रही है, जो रॉकेट को जमीन से ही ट्रैक पर बिजली के जरिए सुपरसोनिक गति देने में सक्षम है। इससे रॉकेट के इंजन हवा में बहुत ऊंचाई पर पहुंचने के बाद ही काम करेंगे, जिससे भारी लागत और ईंधन की बचत होगी। मिसाइल तकनीक के साथ चीन उच्च शक्ति वाले माइक्रोवेव (एचपीएम) और ईएमपी हथियारों का निर्माण कर रहा है। चीन ने अंतरिक्ष में मौजूद दुश्मन के सैटेलाइट्स या संचार प्रणालियों को बिना किसी विस्फोट के जाम या नष्ट करने के लिए इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तकनीक का उपयोग कर रहा है। चीन, अपने फूचियान जैसे अत्याधुनिक विमान वाहक पोतों पर युद्धक विमानों को लॉन्च करने के लिए इलेक्ट्रोमैग्नेटिक सिस्टम को आगे बढ़ा रहा है।

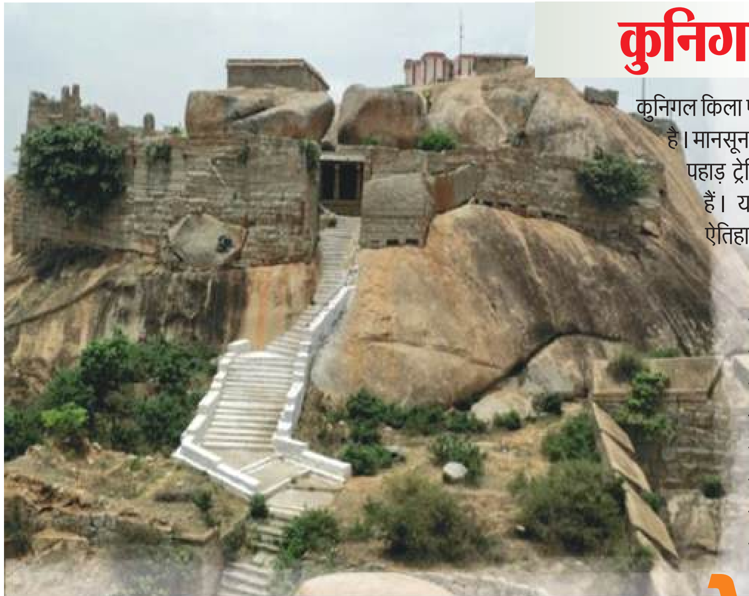

कुनिगल किला ट्रेक

कुनिगल किला एडवेंचर और इतिहास का शानदार मिश्रण है। मानसून में यहां की हरियाली और बादलों से ढके पहाड़ ट्रेकिंग अनुभव को और भी खास बना देते हैं। यह किला अपनी प्राचीन संरचना और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है।

राजमाची ट्रेक

राजमाची किला मुंबई और पुणे के बीच स्थित एक लोकप्रिय मानसून ट्रेक है। बारिश में यहां हरियाली, झरने और धुंध से ढके पहाड़ किसी फिल्मी दृश्य जैसे लगते हैं। यह ट्रेक दो किलों श्रीवर्धन और मनरंजन के लिए प्रसिद्ध है। शुरुआती ट्रेकर्स के लिए भी यह एक आसान और खूबसूरत विकल्प माना जाता है।

भारत के सबसे खूबसूरत मानसून ट्रेक

बारिश का मौसम शुरू होते ही भारत के पहाड़ और घाटियां एक नई हरियाली और ताजगी से भर उठते हैं। मानसून के दौरान प्रकृति का नजारा बेहद मनमोहक हो जाता है, जहां बादलों से ढके पहाड़, झरनों की आवाज और ठंडी हवा एक अलग ही अनुभव देती है। ऐसे समय में ट्रैकिंग का आनंद और भी बढ़ जाता है क्योंकि रास्तों पर हरियाली, छोटे-छोटे झरने और बादलों का साथ यात्रियों को रोमांचित कर देता है। भारत में कई ऐसी बेहतरीन मानसून ट्रेकिंग डेस्टिनेशन हैं, जो एडवेंचर लवर्स के लिए स्वर्ग से कम नहीं हैं। ये ट्रेक न सिर्फ शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण होते हैं बल्कि मानसिक रूप से भी तरोताजा कर देते हैं। चाहे पश्चिमी घाट हो या हिमालय की वादियां, हर जगह मानसून ट्रेकिंग का अपना अलग आकर्षण होता है। आइए जानते हैं कुछ बेहतरीन मानसून ट्रेक्स के बारे में, जहां इस मौसम में जरूर जाना चाहिए।

हरिश्चंद्रगढ़ ट्रेक

हरिश्चंद्रगढ़ मानसून में एडवेंचर प्रेमियों के लिए बेहद खास जगह है। यहां स्थित कोकणकड़ा क्लिफ से बादलों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है, जो यात्रियों को मंत्रमुग्ध कर देता है। यह ट्रेक प्राचीन गुफाओं, मंदिरों और ऐतिहासिक किले के लिए भी जाना जाता है। बारिश के मौसम में फिसलन भरे रास्ते और घने बादल इसे और भी रोमांचक बना देते हैं।

वैली ऑफ फ्लावर्स ट्रेक

वैली ऑफ फ्लावर्स को मानसून में धरती का स्वर्ग कहा जाता है। रिश शुरू होते ही यह पूरा क्षेत्र रंग-बिरंगे जंगली फूलों से भर जाता है। यहां 500 से अधिक प्रकार के फूल पाए जाते हैं, जो इसे यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट बनाते हैं। ट्रेकिंग के दौरान घने जंगल, पहाड़ी नदियां और छोटे-छोटे झरने यात्रा को बेहद रोमांचक बना देते हैं। यह जगह अपनी प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

चंद्रखानी पास ट्रेक

चंद्रखानी पास हिमालय की गोद में स्थित एक शानदार ट्रेक है। यहां से बर्फीली चोटियों और बादलों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। मानसून के दौरान यहां हरियाली और धुंध इसे एक जादुई अनुभव बना देती है। यह ट्रेक थोड़ा चुनौतीपूर्ण जरूर है लेकिन इसका नजारा हर मेहनत को सफल बना देता है।

हंसना मना है

विवाहित औरत पर किस तरह के भावों का प्रभाव पड़ता हैं? मनोविज्ञान के प्रोफेसर ने पूछा। विद्यार्थी-'जी, पति के स्वभाव का एवं बाजार के भाव का।

पिता-'तुम कैसे सिद्ध करोगे कि साग-पात खाने वाले की निगाहें तेज होती हैं। पुत्र-'वाह पिताजी, अभी तक किसी ने बकरे और घोड़े को चश्मा लगाते देखा है क्या?

ज्योंतिषी (रीता से)-'अच्छा, तो तुम खुद प्रेमी का आनेवाला कल जानना चाहती हैं? रीता-'जी नहीं, उसका आनेवाला कल तो मेरे हाथ में है। तुम उसके अतीत के बारे में बताओ।

नेता (भाषण देते हुए)-'हम इस देश के लिए अपनी जान भी दे देंगे। एक इंसान उठकर बोला-'आप महंगाई के खिलाफ क्यों नहीं लड़ते? नेताजी-'मुझे लड़ाई से बहुत ही डर लगता है।

एक यात्री ने बड़े तेज स्वर में रेलवे स्टेशन-मास्टर से शिकायत की-चालीस मिनट हो गए हैं, गाड़ी अब तक नहीं पहुंची। स्टेशन-मास्टर ने कहा-'घबराइए नहीं, ये टिकट चौबीस घंटे तक चल सकता है।

लेखक-'आपने मेरा नया उपन्यास पढ़ा? उसकी सब क्षेत्र में धूम है। आलोचक-मैं तो इतना व्यस्त हूं कि जिन पुस्तकों की बुराई लिखता हूं, उन्हें भी नहीं पढ़ पाता।

कहानी | सत्संग की सही शिक्षा

एक संत ने अपने दो शिष्यों को दो डिब्बों में मूंग के दाने दिये और कहा कि ये मूंग हमारी अमानत हैं। ये सड़े गले नहीं इसका विशेष ध्यान रखना। दो वर्ष बाद जब हम वापस आयेंगे तो इन्हें ले लेंगे। संत तो तीर्थयात्रा के लिए चले गये। इधर एक शिष्य ने मूंग के डिब्बे को पूजा के स्थान पर रखा और रोज उसकी पूजा करने लगा। दूसरे शिष्य ने मूंग के दानों को खेत में बो दिया। इस तरह दो साल में उसके पास बहुत मूंग जमा हो गये। दो साल बाद संत वापस आये और पहले शिष्य से अमानत वापस मांगी तो वह अपने घर से डिब्बा उठा लाया और संत को थमाते हुए बोला: गुरूजी ! आपकी अमानत को मैंने अपने प्राणों की तरह संभाला है। इसे पालने में झुलाया, आरती उतारी, पूजा- अर्चना की... संत बोले- अच्छा ! जरा देखूं तो सही कि अन्दर के माल का क्या हाल है? संत ने ढक्कन खोलकर देखा तो मूंग में घुन लगे पड़े थे। आधे मूंग की तो वे चटनी बना गये, बाकी बचे-खुचे भी बेकार हो गये। संत ने शिष्य को मूंग दिखाते हुए कहा- क्यों बेटा! इन्ही घुनों की पूजा अर्चना करते रहे इतने समय तक! शिष्य बेचारा शर्म से सिर झुकाये चुप चाप खड़ा रहा। इतने में संत ने दूसरे शिष्य को बुलवाकर उससे कहा कि अब तुम भी हमारी अमानत लाओ। थोड़ी देर में दूसरा शिष्य मूंग लादकर आया और संत के सामने रखकर हाथ जोड़कर बोला- गुरूजी ! यह रही आपकी अमानत। संत बहुत प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद देते हुए बोले- बेटा ! तुम्हारी परीक्षा के लिए मैंने यह सब किया था। मैं तुम्हें वर्षों से जो सत्संग सुना रहा हूं, उसको यदि तुम आचरण में नहीं लाओगे, अनुभव में नहीं उतारोगे तो उसका भी हाल इस डिब्बे में पड़े मूंग जैसा हो जायेगा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति रहेगी। योजना फलीभूत होगी। नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। पुराना रोग उभर सकता है। आय में वृद्धि होगी।

वृषभ

निवेश शुभ रहेगा। पूजा-पाठ में मन लगेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जल्दबाजी से हानि संभव है। थकान रहेगी। पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा। कुसंगति से बचें।

मिथुन

आय में निश्चितता रहेगी। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। फालतू खर्च होगा। विवाद को बढ़ावा न दें। अपेक्षाकृत कार्यों में विलंब होगा। चिंता तथा तनाव रहेंगे। शत्रुभय रहेगा।

कर्क

नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। प्रेम-प्रसंग में जोखिम न लें। व्यापार में लाभ होगा। शत्रु पस्त होंगे। विवाद में न पड़ें। प्रसन्नता रहेगी।

सिंह

समय पर कर्ज चुका पाएंगे। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। निवेश शुभ फल देगा। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी।

कन्या

समय की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय लाभप्रद रहेगा। व्यस्तता के चलते स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है।

तुला

आय में निश्चितता रहेगी। दूर से बुरी खबर मिल सकती है। दौड़धूप अधिक होगी। बेवजह तनाव रहेगा। व्यर्थ समय न गंवाएं। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

वृश्चिक

निवेश लाभदायक रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। निवेश कार्यसिद्धि होगी। व्यस्तता रहेगी। शुभ रहेगा। चिंता बनी रहेगी।

धनु

उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। झंझटों से दूर रहें।

मकर

यात्रा लाभदायक रहेगी। बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति संभव है। लापरवाही न करें।

कुम्भ

वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आय होगी। संतुष्टि नहीं होगी। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। बजट बिगड़ेगा।

मीन

संचित कोष में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। कारोबारी सौदे बड़े हो सकते हैं। व्यस्तता के चलते स्वास्थ्य प्रभावित होगा, सावधानी रखें। यात्रा लाभदायक रहेगी।

बॉलीवुड मसाला

30 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी फिल्म भाई तेरा स्टार है

राघव जुयाल बेड्स ऑफ बॉलीवुड और किल फिल्म के लिए जाने जाते हैं। अब उनकी अगली फिल्म आने वाली है, जिसका नाम 'भाई तेरा स्टार है' है। इस फिल्म का टीजर रिलीज हो चुका है। इस टीजर में एक ऐसे लड़के की कहानी दिखाई गई है, जो पूरी तरह से यकीन करता है कि वह सुपरस्टार बनने के लिए ही पैदा हुआ है।

फिल्म में राघव जुयाल अजय सिंह के लीड रोल में नजर आ रहे हैं। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर टीजर शेयर करते हुए लिखा, 'हीरो की एंट्री लेट हो सकती है, लेकिन निराश करने वाली कभी नहीं!' टीजर की शुरुआत कुछ दमदार शब्दों से होती है- 'रॉकिंग, रेबेल, आइकॉन, सुपर अल्ट्रा फ्यूचर' जो फिल्म के मजेदार और एनर्जेटिक टोन को सेट करते हैं। इसमें कॉमेडी, ड्रामा, एक्शन और राघव की शानदार कॉमिक टाइमिंग का जबरदस्त मिक्स देखने को मिलता है।

इससे पहले फिल्म का पहला पोस्टर भी रिलीज हुआ था, जिसमें अजय के किरदार को 'टैलेंट लोडिंग' टैगलाइन के साथ दिखाया गया था। अब टीजर उसी कहानी को आगे बढ़ाता नजर आता है।

मेकर्स ने फिल्म की रिलीज डेट भी अनाउंस कर दी है। 'भाई तेरा स्टार है' 30 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। यह फिल्म ईस्टवुड पिक्चर्स के बैनर तले बनी है और इसे विवेक बी अग्रवाल ने डायरेक्ट किया है। फिल्म की कहानी विवेक बी अग्रवाल और सुदीप्तो सरकार ने मिलकर लिखी है। वहीं, अवंतिका हरी, सुनील रूपाणी और विवेक बी अग्रवाल इसके प्रोड्यूसर हैं।

लॉक अप फेम पायल रोहतगी पर चढ़ा म्यूजिक का खुमार

पायल रोहतगी इन दिनों सुर्खियों में आ गई हैं। रियलिटी शो लॉक अप सीजन 1 में रनर-अप रह चुकी पायल से जुड़ी एक बड़ी और इंटरेस्टिंग जानकारी सामने आई है कि वो इन दिनों म्यूजिक सीख रही हैं। उन्होंने मशहूर सिंगर कैलाश खेर के एकेडमी में एडमिशन लिया है, जिसके बारे में उन्होंने इंटरव्यू में खुलकर बात की।

पर्दे से दूर पायल रोहतगी म्यूजिक की दुनिया में कदम रख चुकी हैं। बीते कुछ समय से वो मुंबई में कैलाश खेर के म्यूजिक एकेडमी में गाने और उसकी बारीकियों को सीख रही हैं। इसी बीच एबीपी न्यूज के साथ बातचीत में जब उनसे पूछा गया कि क्या कैलाश खेर खुद उन्हें सीखते हैं? तो पायल ने कहा, कैलाश जी खुद नहीं सिखाते, बल्कि उनके एकेडमी में कई टीचर्स है, जो सभी को म्यूजिक सिखाते हैं। मैंने उनकी एकेडमी में पिछले साल नवंबर या दिसंबर में एनरोल किया था। इतने साल एक्टर के तौर पर काम करने के बाद मुझे इंस्ट्रूमेंट के बारे में उतनी समझ नहीं थी। इसीलिए मैंने इसे सीखना चाहा।

उन्होंने आगे बताया कि वहां के टीचर्स ने उन्हें गाना पकड़ना और बेसिक चीजें सिखाईं। वो घर पर भी इसकी प्रैक्टिस करती हूं, साथ ही मधुश्री जी के एक और टीचर उन्हें सिखाने आते हैं। वहीं उन्होंने कहा कि खुद के पॉजिटिव ग्रोथ के लिए उन्होंने म्यूजिक सीखना शुरू किया। कैलाश खेर का एकेडमी उनके घर के पास है, इसीलिए वो वहां चली गईं। इसके अलावा पायल ने कैलाश खेर से मिलने के बारे में बताया कि वो उनसे एक्ट्रेस के तौर पर मिली थी क्योंकि वो उनके पहले आइटम सॉन्ग के सिंगर थे, जिसका नाम ओ सिकंदर था। पायल और कैलाश खेर ने उस समय ही अपने करियर की शुरुआत ही की थी। हालांकि कैलाश खेर अब बहुत बड़े सिंगर बन चुके हैं और एकेडमी में आने के बाद वो उनसे नहीं मिल पाईं।

बता दें कि पायल ने अपने करियर की शुरुआत फेमिना मिस इंडिया से की थी। इसके बाद उन्होंने 2002 में ये क्या हो रहा है? फिल्म से बॉलीवुड में कदम रखा और प्लान, कॉर्पोरेट, 26 चाइना टाउन, ढोल, दिल कबड्डी और हे बेबी जैसी फिल्मों में नजर आईं। इसके अलावा उन्हें बिग बॉस 2, सर्वाइवर इंडिया, नच बलिए 7 और लॉक अप जैसे रियलिटी शोज में देखा गया। हालांकि 2022 में पहलवान संग्राम सिंह के शादी के बाद उन्हें पर्दे पर नहीं देखा गया।

बॉलीवुड मन की बात

यौन शिक्षा के प्रति लोगों की सोच को बदलने में समय लगेगा : मिथिला

अभिनेत्री मिथिला पालकर इन दिनों अपनी हालिया रिलीज सीरीज 'सुपर सुब्बू' को लेकर चर्चाओं में हैं। यह सीरीज यौन शिक्षा के बारे में बात करती है। एक्ट्रेस का मानना है कि स्क्रीन पर यौन शिक्षा के बारे में बात करने की बड़ी जिम्मेदारी होती है। मिथिला ने बताया कि आखिर क्यों उन्होंने इस सीरीज को हां किया और साथ ही अपने परिवार के बारे में भी की बात। यौन शिक्षा जैसे टैबू विषय पर मिथिला ने कहा कि मुझे लगता है कि यह बहुत संवेदनशील विषय है और इसके नतीजे कुछ भी हो सकते हैं। इसलिए जिस तरह से स्क्रिप्ट में इसे संभाला गया और जिस तरह से उन्होंने हर किरदार और कहानी को लिखा है, उससे मैं बहुत खुश थी। इसने मुझे बहुत खुश कर दिया। स्क्रिप्ट पढ़ना खत्म करते-करते मुझे यकीन हो गया था कि मैं इसका हिस्सा बनना चाहती हूं। किसी संवेदनशील विषय को खासकर जब उसमें कॉमेडी भी हो सही संवेदनशीलता के साथ और बिना उसे हल्का बनाए पेश करने के लिए वाकई खास हुनर की जरूरत होती है। भले ही इस सीरीज में ह्यूमर का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन जिन मुद्दों पर इसमें बात की गई है, उनका मजाक कभी नहीं उड़ाया गया। हम बहुत हल्के-फुल्के अंदाज में जरूरी बातों पर चर्चा कर रहे हैं, लेकिन हम उन्हें लेकर पूरी तरह से गंभीर और पक्के हैं। हम किसी भी विषय या स्थिति को हल्के में नहीं ले रहे हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि इसे बहुत ही बेहतरीन ढंग से लिखा गया है। मिथिला का मानना है कि सुपर सुब्बू यौन शिक्षा के बारे में लोगों की सीमित सोच को चुनौती देता है। उन्होंने कहा कि जब आप यौन शिक्षा के बारे में सोचते हैं, तो आपके मन में इसके बारे में बहुत सीमित विचार आते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि हम उन बहुत जरूरी चीजों के बारे में बात कर रहे हैं जो असल में इसका हिस्सा होनी चाहिए।

इस खूनी झरने का 100 साल पुराना रहस्य सुलझा, नीचे मिला खारे पानी का समंदर

अंटार्कटिका की बर्फीली वादियों में बहने वाले लाल झरने ने दुनिया को हमेशा चौंकाया है। मैकमुर्डो ड्राई वैलीज में मौजूद टेलर ग्लेशियर से यह लाल पानी बहता है। पहली नजर में यह बिल्कुल इंसानी खून जैसा दिखता है। इसी वजह से इसे ब्लड फॉल्स कहा जाता है। इस खौफनाक नजारे को देखकर लोग अक्सर डर जाते थे। इस रहस्यमयी झरने की खोज साल 1911 में हुई थी। ऑस्ट्रेलियन जियोलॉजिस्ट ग्रिफिथ टेलर ने इसे पहली बार देखा था। तब से ही इसके असली कारण पर लंबी बहस चल रही थी। कई लोग इसे कोई श्राप मानते थे। कुछ लोग इसके पीछे ज्वालामुखी का हाथ बताते थे। एक सदी से ज्यादा समय तक यह एक पहेली बना रहा। अब जाकर साइंटिस्ट्स ने इस पुराने रहस्य पर से पर्दा उठा दिया है। यह कोई खून या जादू नहीं है। लेटेस्ट रिसर्च में वैज्ञानिक सच सामने आया है। आखिर ग्लेशियर के अंदर से खून जैसा लाल पानी क्यों निकलता है? साइंटिस्ट्स ने अंटार्कटिका साइंस जर्नल में अपनी नई रिसर्च पब्लिश की है। इसके मुताबिक ग्लेशियर के नीचे एक प्राचीन अंडरग्राउंड वाटर रिजर्व है। इस रिजर्व में बहुत ही ज्यादा खारा पानी भरा हुआ है। ग्लेशियर के मूवमेंट से भारी प्रेशर पैदा होता है। इसी प्रेशर की वजह से यह खारा पानी बर्फ की छिपी दरारों से बाहर आ जाता है। इस पानी में भारी मात्रा में आयरन घुला होता है। बाहर आते ही आयरन हवा में मौजूद ऑक्सीजन से रिएक्ट करता है। यह बिल्कुल लोहे पर जंग लगने जैसा ही एक प्रोसेस है। इसी केमिकल रिएक्शन के कारण पानी का रंग लाल हो जाता है। साल 2017 में अलास्का फेयरबैंक्स यूनिवर्सिटी के रिसर्चर्स ने राडार इमेजिंग का इस्तेमाल किया था। उन्होंने बर्फ के अंदर मौजूद पानी के इन रास्तों का पूरा नक्शा तैयार किया था। अंटार्कटिका में तापमान हमेशा फ्रीजिंग पॉइंट से बहुत नीचे रहता है। ऐसे में पानी का लिक्विड फॉर्म में रहना हैरान करने वाला है। इस पहेली का जवाब पानी में मौजूद भारी नमक में छिपा है। रिसर्चर्स ने बताया कि इस खारे पानी में नमक की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। अत्यधिक नमक के कारण पानी का फ्रीजिंग पॉइंट नॉर्मल पानी से काफी नीचे चला जाता है। जब यह पानी जमने की कोशिश करता है, तो उसमें से हीट निकलती है। इसी हीट और नमक के कॉम्बो के कारण यह पानी कभी जमता नहीं है। इसी वजह से टेलर ग्लेशियर को दुनिया का सबसे ठंडा ग्लेशियर माना जाता है। यहां से लगातार लिक्विड फॉर्म में पानी का बहाव होता रहता है। ग्लेशियर के नीचे छिपे इस प्राचीन पानी में क्या जीवन संभव है?

अजब-गजब ये है दुनिया का अनोखा बीच

इस बीच पर मर्द-औरतें आज भी नहाते हैं अलग अलग, बीचों-बीच खड़ी है कंक्रीट की दीवार!

समंदर का किनारा हर किसी को भाता है. चाहे दोस्तों की टोली के साथ घूमने की बारी हो या फिर शादी के बाद हनीमून पर जाने की तैयारी हो, ज्यादातर लोगों की पहली पसंद समुद्री बीच होते हैं। यहां पर पुरुष से लेकर महिलाएं तक, बेपरवाह होकर अपनी जिंदगी जीते हैं, समंदर की पानी का लुत्फ उठाते हैं। लेकिन क्या आप किसी ऐसे बीच के बारे में जानते हैं, जहां पर पुरुष और महिलाओं का साथ नहाना बिल्कुल मना है?

अगर नहीं जानते तो बता दें कि इटली के एड्रियाटिक तट पर बसे खूबसूरत शहर त्रिएस्ते में एल पेदोचिन नाम का एक ऐसा ही अनोखा बीच है, जिसे दुनिया का इकलौता और पूरे यूरोप का आखिरी जेंडर-सेग्रिगेटेड (महिला और पुरुषों के लिए अलग) बीच माना जाता है।

साल 1903 से ही इस समंदर तट के बीचों-बीच एक 9 फीट (करीब 2.7 मीटर) ऊंची सफेद कंक्रीट की दीवार खड़ी है, जो मर्दों और औरतों के नहाने और धूप सेंकने वाले हिस्से को दो अलग-अलग टुकड़ों में बांट देती है। 120 साल पहले जब यह बना था, तब इसका मकसद औरतों को बिना किसी डर या तांक-झांक के बिकनी या छोटे कपड़े पहनने की आजादी देना था, लेकिन आज की दुनिया में यह दीवार एक बड़े विवाद का कारण बन चुकी है। इस बीच का नियम इतना कड़ा है कि दोनों तरफ जाने के लिए रास्ते भी अलग हैं और स्थानीय प्रशासन यहां एंट्री के लिए प्रति व्यक्ति करीब 150 रुपये का चार्ज वसूलता है। यह दीवार सिर्फ जमीन पर नहीं, बल्कि समंदर के उथले पानी के अंदर तक जाती है। हालांकि, गहरे पानी में तैरते समय मर्द और औरतें आपस में मिल सकते हैं, लेकिन रेतीले तट पर एक-दूसरे के इलाके में जाना पूरी तरह बैन है।

इसी कड़े नियम के चलते इस महीने बीच पर एक अजीबोगरीब ड्रामा देखने को मिला, जब एक महिला पुरुषों वाले हिस्से में घुस गई। वहां मौजूद मर्दों ने तुरंत उस महिला को घेर लिया और उसे वापस अपनी तरफ जाने को कहा, जिस पर महिला भड़क उठी और चिल्लाने लगी कि तुम सब दकियानूसी और जाहिल हो, यह सरासर गलत है।

बाद में पता चला कि वह महिला केवल अपने दिव्यांग बेटे के कपड़े उतारने में अपने पति की मदद करने के लिए उस तरफ गई थी, लेकिन वहां के पुरुषों को नियमों के आगे यह वजह भी मंजूर नहीं थी। सुरक्षाकर्मियों ने लड़ाई बढ़ने से पहले ही महिला को बाहर निकाल दिया। इस घटना के बाद इंटरनेट पर एक बड़ी बहस छिड़ गई है। कई लोग इसे मध्यकालीन और पिछड़ी सोच बता रहे हैं, तो वहीं स्थानीय लोगों का कहना है कि पेदोचिन बीच त्रिएस्ते शहर के इतिहास और परंपरा का एक अटूट हिस्सा है।

बंगाल में फिर आया सियासी भूचाल

टीएमसी में बगावत के बीच ममता ने खुद संभाली अध्यक्ष की कमान

» राज्यसभा चुनाव के लिए कसनी होगी कमर, 24 जुलाई को मतदान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकता। पश्चिम बंगाल टीएमसी अध्यक्ष और पूर्व मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। यह इस्तीफा पश्चिम बंगाल की राजनीति में मचे भारी हंगामे के बीच आया है। कोलकाता में टीएमसी के राज्य पार्टी कार्यालय के मालिक ने परिसर को अंदर से बंद कर दिया था, क्योंकि ऐसी खबरें आई थीं कि विपक्ष के नेता रिताब्रता बनर्जी के नेतृत्व वाले बागी गुट ने इमारत पर कब्जा कर लिया है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने घोषणा की कि वह पार्टी की राज्य इकाई की अध्यक्ष की भूमिका भी संभालेंगी और मदन मित्रा तथा कुणाल घोष को राज्य समिति में महासचिव के तौर पर शामिल किया।

मदन मित्रा और कुणाल घोष महासचिव होंगे

वहीं पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में हार के बाद तृणमूल कांग्रेस के तीन राज्यसभा सांसदों ने इस्तीफा दिया था इन सीटों पर निर्वाचन आयोग ने चुनाव का ऐलान कर दिया है। इन तीनों ही सीटों पर 24 जुलाई को मतदान होगा। वहीं ममता बनर्जी को लिखे अपने इस्तीफ़े के पत्र में, भट्टाचार्य ने कहा कि वह जून 26 में उन्हें मिले राज्य अध्यक्ष के पद से हट रही हैं। उन्होंने पार्टी के बैंक खातों के लिए अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता और भारत के चुनाव आयोग के सामने दीदी के अधिकृत व्यक्ति के तौर पर भी अपना नाम वापस ले लिया। बनर्जी ने एक वीडियो संदेश में कहा टीएमसी चेयरपर्सन के तौर पर, मैं घोषणा करती हूं कि आज से मैं पश्चिम बंगाल राज्य इकाई के अध्यक्ष की भूमिका भी संभालूंगी। पार्टी समिति में दो और लोगों--मदन मित्रा और कुणाल घोष--को शामिल किया गया है। दोनों को इस समिति का महासचिव नियुक्त किया गया है। यह घटनाक्रम पार्टी के भीतर चल रही अंदरूनी संगठनात्मक कलह और रिताब्रता बनर्जी के नेतृत्व वाले बागी गुट द्वारा पार्टी मुख्यालय पर कब्जा करने के बाद सामने आया है।

सुखेंदु शेखर रॉय, सुष्मिता देव व प्रकाश चिक ने दिए थे इस्तीफे

ममता बनर्जी के करीबी माने जाने वाले सुखेंदु शेखर रॉय पहले राज्यसभा सांसद थे, जिन्होंने आठ जून को टीएमसी और संसद की सदस्यता से इस्तीफा दिया था।उन्होंने टीएमसी में भ्रष्टाचार, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और ममता बनर्जी के नेतृत्व पर सवाल उठाए थे। सुखेंदु शेखर रॉय के बाद बाद सुष्मिता देव ने 10 जून को टीएमसी छोड़ने का ऐलान कर दिया था। इस्तीफा सौंपने के तुरंत बाद सुष्मिता देव नेदिल्ली में असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा से मुलाकात की थी, जिसके बाद कयास लगाए जाने लगे थे कि वह बीजेपी में शामिल हो सकती हैं और बीजेपी उन्हें असम से राज्यसभा भेज सकती है। सुष्मिता देव असम के सिलचर की रहने वाली हैं और 14 में कांग्रेस की टिकट पर सिलचर से सांसद बनी थीं। इसके अलावा कांग्रेस ने उन्हें महिला कांग्रेस का अध्यक्ष भी बनाया था। सुष्मिता पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता संतोष मोहन देव की बेटी है। वहीं शुखेंदु शेखर और सुष्मिता देव के बाद प्रकाश चिक बराइक तीसरे राज्यसभा सांसद थे, जिन्होंने टीएमसी से इस्तीफा दिया था. हालांकि उन्होंने अपने इस्तीफे में न तो ममता बनर्जी और न ही टीएमसी पर कोई आरोप लगाया।

राममंदिर चंदा विवाद से हिंदू आस्था हुई आहत : भागवत

» संघ प्रमुख बोले- होसबोले की हर बात से हम सहमत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने राम मंदिर चंदे के विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि वह इस पूरे मामले पर संघ के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले की बात से पूरी तरह सहमत हैं। नागपुर में पत्रकारों से बातचीत के दौरान जब भागवत से चंदा चोरी के आरोपों पर सवाल पूछा गया, तो उन्होंने कहा, होसबाले जी का बयान देखिए... मेरी भी वही प्रतिक्रिया है। इससे पहले शुक्रवार को आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने इस मामले पर एक बयान जारी किया था। उन्होंने कहा था कि अयोध्या के राम मंदिर में चंदे की हेराफेरी के आरोपों ने पूरे समाज की भावनाओं और आस्था को गहरी ठेस पहुंचाई है।

पूरी तरह डर गयी है विहिप : सौरभ भारद्वाज

राम जन्मभूमि चंदा चोरी के आरोपों को लेकर विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार द्वारा पुलिस को लिखे गए पत्र पर अब आम आदमी पार्टी ने तीखा पलटवार किया है। आप के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने इस मामले पर बयान जारी करते हुए विहिप पर गंभीर सवाल उठाए हैं। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि विहिप अध्यक्ष के इस कदम से यह साफ हो गया है कि संगठन इस बात से बहुत परेशान है कि देश भर में चंदा चोरी का मुद्दा उठाया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि विहिप के इरादे साफ नहीं हैं। अगर उनके इरादे साफ होते, तो वे खुद कहते कि उनकी संस्था के भीतर ही ऐसे कई लोग हैं जो इस मामले में सामने आकर गवाही देना चाहते हैं, क्योंकि इस ट्रस्ट में उनके ही संगठन से जुड़े लोग शामिल थे।

होसबाले ने सरकार और जांच एजेंसियों से मांग की थी कि इस मामले की पूरी जांच की जाए और जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाए, उसे सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। होसबाले ने अपने बयान में इस बात पर भी जोर दिया था कि कुछ हिंदू विरोधी और देश-विरोधी ताकतें इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का फायदा उठाने की कोशिश कर रही हैं। वे इस बहाने हिंदू धर्म को बदनाम करना चाहती हैं। उन्होंने हिंदू समाज से अपील की कि इस मुश्किल समय में वे सब्र और संयम बनाए रखें और ऐसी किसी भी साजिश को कामयाब न होने दें।

हिमाचल प्रदेश विस चुनाव में बीजेपी कहीं नहीं : सुक्खू

» सीएम बोले- बीजेपी झूठे प्रचार करती है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। शिमला में हिमाचल प्रदेश कांग्रेस ने प्रदेश कार्यकारिणी को लेकर बैठक की गई है। इस दौरान मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने संगठन और आगामी राजनीतिक रणनीति को लेकर बड़ा बयान दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बीजेपी के झूठे प्रचार का जवाब देने और संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा के लिए यह बैठक बुलाई गई है। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने 27 विधानसभा चुनाव को लेकर दावा किया है कि लोकतंत्र में मिशन रिपीट का फैसला जनता करती है, लेकिन उन्हें पूरा विश्वास है कि 27 में बीजेपी की सरकार नहीं बनेगी और बीजेपी के विधायकों की संख्या वर्तमान से भी कम हो जाएगी।

कांग्रेस की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी की बैठक प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि कैबिनेट में एक पद अभी खाली है और उसे भरा जाना है। हालांकि इसका अंतिम निर्णय पार्टी आलाकमान द्वारा लिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि मौसम अनुकूल रहा तो 16 और 17 जुलाई को धर्मशाला में कांग्रेस की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी की बैठक आयोजित की जाएगी। किन्नौर कांग्रेस मंत्री जगत सिंह नेगी और जिला कांग्रेस अध्यक्ष निगम भंडारी के बीच चल रहे मतभेदों पर भी मुख्यमंत्री ने अपनी राय सामने सामने रखी है उन्होंने कहा कि दोनों नेताओं के बीच किसी प्रकार का मनमुटाव नहीं है। विचारों में भिन्नता हो सकती है, लेकिन इसे विवाद का रूप देना गलत है।

आनंद वर्मा सातवीं बार अध्यक्ष चुने गए

» नगर निगम कर्मचारी संघ कार्यकारिणी का निर्वाचन संपन्न

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम कर्मचारी संघ लखनऊ कार्यकारिणी का निर्वाचन आम सभा के माध्यम से संघ कार्यालय, द्वितीय तल, नगर निगम, लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस कार्यकारिणी की घोषणा नगर निगम के प्रेक्षागृह में निर्वाचन अधिकारियों द्वारा की गई। नई कार्यकारिणी के एक बार फिर आम सभा ने सर्वसम्मति से आनंद वर्मा को अध्यक्ष चुना। आनंद वर्मा लगातार सातवी बार अध्यक्ष चुने गए।

नगर निगम कर्मचारी संघ, लखनऊ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी वर्ष 26 का चुनाव आम सभा के माध्यम से वरिष्ठ कर्मचारी नेता रामरंग मिश्रा , नगर निगम कर्मचारी संघ, लखनऊ के पूर्व अध्यक्ष, मो. अकील, कार्यवाहक अध्यक्ष राज्य कर्मचारी महासंघ सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष विद्युत सुरक्षा निदेशालय उ.प्र. पवन गौड , की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। आम सभा के माध्यम से नगर निगम लखनऊ के कर्मचारियों द्वारा नगर निगम कर्मचारी संघ, लखनऊ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी वर्ष 026 का गठन किया गया। निर्वाचन अधिकारी नगर निगम कर्मचारी संघ, लखनऊ के पूर्व अध्यक्ष, मो. अकील, नगर निगम कर्मचारी संघ, लखनऊ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी वर्ष 026 की घोषणा करते हुए बताया कि अब्दुल तनवीर संरक्षक, आनन्द वर्मा अध्यक्ष,मोहम्मद शोएब, हेमन्त कुमार और सुखदेव प्रसाद यादव उपाध्यक्ष, शमील एखलाक महामंत्री, मिर्जा इरशाद बेग, विजय लक्ष्मी, रेखा यादव मंत्री,अर्जुन यादव संगठन मंत्री, निखलेश खरे प्रचार मंत्री,शत्रोहन लाल कार्यालय मंत्री, अनुज गुप्ता जाकिर अली संयुक्त मंत्री संयुक्त मंत्री, विशाल श्रीवास्तव सलाहकार, यश प्रकाश गुप्ता कोषाध्यक्ष, शिव शंकर राय उप कोषाध्यक्ष, मोहम्मद शमशाद, पवन पाल, मोहम्मद जमा और अरूण पाल सदस्य कार्यकारिणी चुने गए। नवनिर्वाचित अध्यक्ष आनंद वर्मा और महामंत्री शमील अखलाक ने सदस्यों की भागीदारी और विश्वास का आभार जताते हुए लम्बित समस्याओं के निराकरण के लिए अपनी प्राथमिकताओं से सदन को अवगत कराया।

महिला टी20 विश्वकप में ऑस्ट्रेलिया का दबदबा कायम

» 10 संस्करण में जीते सात खिताब, फाइनल में चौथी बार इंग्लैंड को हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लंदन। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद बेथ मूनी के अर्धशतक की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को हराकर महिला टी20 विश्वकप का खिताब अपने नाम कर लिया है। ऑस्ट्रेलिया ने सातवीं बार इस टूर्नामेंट की ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। ऑस्ट्रेलिया ने इस मैच में टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला लिया। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में चार विकेट पर 150 रन बनाए। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने 17.1 ओवर में तीन विकेट पर 153 रन बनाकर मैच अपने नाम किया।

महिला टी20 विश्व कप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच यह चौथी भिड़ंत थी और ऑस्ट्रेलिया ने अपना दबदबा बरकरार रखा। ऑस्ट्रेलिया टीम ने इंग्लैंड को सात विकेट से हराकर फाइनल में इस टीम के खिलाफ लगातार चौथी जीत दर्ज की। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ने 2012, 2014 और 2018 के फाइनल में भी इंग्लैंड को हराकर खिताब जीता था। अब 2026 के फाइनल में भी जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ विश्व कप फाइनल में अपना रिकॉर्ड 4-0 कर लिया और रिकॉर्ड 10 संस्करण में सातवीं बार महिला टी20 विश्व कप ट्रॉफी अपने नाम की है। बता दें पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम ने फाइनल में भी अपना दबदबा कायम रखा और मेजबान इंग्लैंड के दूसरी बार चैंपियन बनने के सपने को तोड़ दिया। इंग्लैंड की नजर 17 साल बाद दूसरी बार टी20 विश्व कप जीतने पर थी। उसने 2009 में लॉर्ड्स में ही पहला महिला टी20 विश्वकप अपने नाम किया था, लेकिन इस बार उसे फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। वहीं ऑस्ट्रेलिया ने अपने शानदार रिकॉर्ड को और मजबूत करते हुए सातवीं बार ट्रॉफी पर कब्जा जमाया और महिला टी20 क्रिकेट में अपनी बादशाहत एक बार फिर साबित कर दी।

विजेता टीम को मिले 22 करोड़ रुपये

लंदन। महिला टी20 विश्व कप इस बार कई मायनों में विशेष रहा। पहली बार इसमें 12 टीमों ने हिस्सा लिया और मैचों की संख्या में भी वृद्धि हुई। ग्रूप चरण में इस बार कुल 30 मुकाबले खेले गए जो 2024 की तुलना में 10 ज्यादा हैं। पिछली बार ग्रूप चरण में 20 मुकाबले खेले गए थे। महिला टी20 विश्व कप का समापन रविवार को ऐतिहासिक लॉर्ड्स मैदान पर खेले गए फाइनल के साथ हो गया। खिताब जीतने के साथ ही ऑस्ट्रेलियाई टीम पर इनामी राशि की भी बारिश हुई। इस बार महिला टी20 विश्व कप की कुल इनामी राशि में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आईसीसी ने मौजूदा टी20 विश्व कप के लिए लगभग 83.45 करोड़ रुपये की कुल इनामी राशि रखी है जो पिछली बार की तुलना में 10 प्रतिशत ज्यादा है। टूर्नामेंट की विजेता टीम को लगभग 22 करोड़ रुपये मिले, जो पिछली बार के बराबर है। उपविजेता टीम को लगभग 11 करोड़ रुपये मिलेंगे। सेमीफाइनल में हारने वाली टीमों को लगभग 6.29 करोड़ रुपये दिए जाएंगे, जबकि ग्रूप स्टेज में हर जीत की कीमत लगभग 29 लाख रुपये है, जो 2024 जैसा ही है।

सतलुज बैन से पंजाब की राजनीति में तूफान

एसजीपीसी, अकाली दल व अकाल तख्त ने बोलने की आजादी पर बताया हमला, राज्य के मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा पर बनी दिलजीत दोसांझ की फिल्म

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा पर बनी दिलजीत दोसांझ की फिल्म को ओटीटी प्लेटफार्म से हटा दिया गया है। इससे पंजाब की राजनीति में तूफान सा आ गया है। अकली दल, एसजीपीसी, अकाल तख्त ने इस फैसले की आलोचना की है। अन्य विपक्षी पार्टियों ने इस पर अपनी कड़ी प्रतिक्रिया दिया है।

दिलजीत दोसांझ की फिल्म सतलुज को ॡॹॹ से हटाए जाने को लेकर पंजाब में राजनीति विवाद खड़ा हो गया है। लंबे इंतजार के बाद नाम बदलकर इस फिल्म को ओटीटी पर रीलिज किया गया था। लेकिन कुछ ही दिनों में इसे हटाने की घोषणा की। जिसके बाद देश के प्रमुख गुरुद्वारों का प्रबंधन करने वाली शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) ने फिल्म के समर्थन में खुलकर आवाज उठाई है। अकाली दल प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि जी-5 द्वारा फिल्म को हटाया जाना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सच और सामूहिक स्मृति पर हमला है। उन्होंने इस कदम की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि पंजाब को अपने अतीत का सामना ईमानदारी से करने का अधिकार है। मालूम हो कि फिल्म सतलुज पंजाब में उग्रवाद के दौर के दौरान कथित फर्जी मुठभेड़ों और गायब किए गए लोगों के मामलों को उजागर करने के लिए संघर्ष करने वाले एक मानवाधिकार कार्यकर्ता की कहानी पर आधारित है।

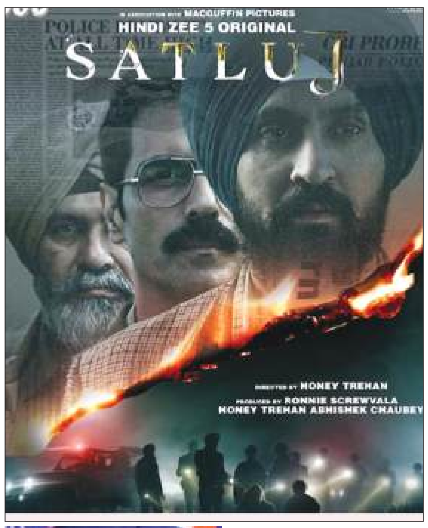

पंजाब के युवाओं से फिल्म देखनी चाहिए : कुलवंत सिंह

एसजीपीसी के मुख्य सचिव कुलवंत सिंह मन्नन ने पंजाब के युवाओं से फिल्म देखने की अपील की। उन्होंने कहा कि यह फिल्म उस दौर की वास्तविक घटनाओं को सामने लाती है और मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा के संघर्ष तथा योगदान को समझने का अवसर प्रदान करती है।

इस मुद्दे को राजनीतिक रंग नहीं दिया जाना चाहिए : तारिक अनवर

कांग्रेस सांसद तारिक अनवर ने कहा कि इस मुद्दे को राजनीतिक रंग नहीं दिया जाना चाहिए। उनका कहना है कि अगर फिल्म तथ्यों पर आधारित है तो उसे स्वीकार किया जाना चाहिए, लेकिन अनावश्यक राजनीति से बचना चाहिए।

जिम्मेदार लोगों को कानून के अनुसार सजा मिलनी चाहिए : कुलदीप सिंह

अकाल तख्त के जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंह गर्गज ने भी फिल्म का समर्थन करते हुए कहा कि किसी भी गैरकानूनी हत्या के लिए जिम्मेदार लोगों को कानून के अनुसार सजा मिलनी चाहिए।

एक दमदार फिल्म जो हिम्मत से पंजाब के दर्दनाक इतिहास को सामने लाई है : सुखबीर सिंह बादल

सुखबीर सिंह बादल ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा- भारत में चैनल से सतलुज को मनमाने ढंग से हटाने से हैरान और दुखी हूं। एक दमदार फिल्म जो हिम्मत से पंजाब के दर्दनाक इतिहास को सामने लाती है और जसवंत सिंह खालरा के सबसे बड़े बलिदान का सम्मान करती है, उसे इस तरह चुप नहीं कराया जा सकता। यह सिर्फ सेंसरशिप नहीं, यह हमारी कलेक्टिव मेमोरी, सच्चाई और बोलने की आजादी पर हमला ह,मैं इस कदम की कड़ी निंदा करता हूं. पंजाब को अपने अतीत का ईमानदारी से सामना करने का हक़ है, न कि दबाने का।

ऐसी कहानी कही जाए जिससे समाज में भाईचारा और एकता प्रभावित न हो : अमन अरोड़ा

पंजाब सरकार में मंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता अमन अरोड़ा ने कहा कि फिल्म कथित फर्जी मुठभेड़ों पर आधारित बताई जा रही है और इतिहास के तथ्यों को सामने लाना जरूरी है, लेकिन उन्हें ऐसे तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे समाज में भाईचारा और एकता प्रभावित न हो।

मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा की है कहानी

फिल्म मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने पंजाब में कथित फर्जी मुठभेड़ों और गुप्त अंतिम संस्कारों के मामलों को उजागर किया था। 1952 में अमृतसर जिले के खालरा गांव में जन्मे खालड़ा पहले बैंक कर्मचारी थे, लेकिन बाद में पूर्णकालिक सामाजिक और मानवाधिकार कार्यकर्ता बन गए। फिल्म का मूल नाम पंजाब 95 था। इसे 022 में केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पास प्रमाणन के लिए भेजा गया था, लेकिन यह करीब तीन वर्षों तक प्रक्रिया में अटका रहा। निर्माताओं का आरोप था कि सतलुज ने फिल्म में 127 कट लगाने की मांग की थी। अंततः फिल्म 3 जुलाई को सतलुज नाम से जी 5 पर रिलीज हुई और इसे दर्शकों तथा समीक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

नोएडा से लखनऊ तक 58 जिलों में बारिश की चेतावनी

कई जगह जमकर बरसा पानी, प्रदेश में उमस भरी गर्मी से मिली राहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में मानसून धीमी गति से आगे बढ़ रहा हैं। रविवार को प्रदेश के कई हिस्सों में बारिश देखने को मिली, जिससे लोगों को उमस भरी और चिपचिपी गर्मी से थोड़ी राहत मिली हैं। मौसम विभाग ने आज भी प्रदेश के 58 जिलों में गरज-चमक के साथ बारिश और वज्रपात की चेतावनी दी हैं। आने वाले दिनों में मानसून की रफ़्तार में और तेजी आएगी। यूपी में मानसून की एंट्री के बाद भी लोग झमाझम बारिश के लिए तरस रहे हैं। ज़्यादातर जगहों पर हल्की-फुल्की बारिश ही हो रही हैं, जिससे लोगों को तीखी धूप और उमस भरी गर्मी झेलनी पड़ रही है।

मौसम विभाग ने आज 6 जुलाई सोमवार को भी हल्की से मध्यम बारिश होने का अनुमान जताया है। इस दौरान आगरा, लखनऊ से लेकर वाराणसी और प्रयागराज में भी गरज चमक के साथ बारिश होगी। राजधानी लखनऊ में सुबह से आंशिक तौर पर बादल छाए हैं। दोपहर के बाद यहां कुछ इलाकों में बूंदाबांदी हो सकती है। अयोध्या, वाराणसी और प्रयागराज व आसपास के इलाकों में भी आज बारिश के आसार बन रहे हैं। नोएडा, गाजियाबाद, मेरठ में आज मानसून की गतिविधियां बनी रहेगी, कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होगी 7 और 8 जुलाई को मानसून में तेजी आएगी और 9 जुलाई से प्रदेश में झमाझम बारिश का सिलसिला शुरू हो जाएगा।

महाराष्ट्र व गुजरात में पानी ही पानी, मुंबई में चॉल गिरने से छह की मौत

उधर महाराष्ट्र व गुजरात में लगातार भारी बारिश जारी है। इसके कारण मुंबई में दो जगह भूस्खलन हुआ।मलबे में लोग दबे हुए हैं। बचाव के लिए एनडीआरएफ रवाना हो चुकी है। मुंबई-पुणे एक्सप्रेस-वे और पुराना हाइवे भी बंद कर दिया गया है। इतना ही नहीं, भारी बारिश देखते हुए कई ट्रेनें भी रद्द कर दी गईं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मुंबई के मानखुर्द इलाके में चॉल गिरने की घटना पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने हादसे में जान गंवाने वाले छह लोगों के परिजनों को राज्य सरकार की ओर से पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। यह हादसा रविवार रात भारी बारिश के बीच मंडाला इलाके में हुआ, जब तीन मंजिला चॉल का एक हिस्सा अचानक ढह गया। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने सोमवार को मुंबई, ठाणे और रायगढ़ जिलों के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। विभाग ने इन इलाकों में भारी से अत्यधिक भारी बारिश, 70 से 80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं और आंधी-तूफान की चेतावनी दी है। मौसम में अचानक बदलाव को देखते हुए ऑरेंज अलर्ट को रेड अलर्ट में बदला गया।

विपक्ष से विहिप की मांग बेतुकी है, उतनी ही बेशर्मी भरी : वेणुगोपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले को लेकर विपक्ष सरकार और हिंदू संगठनों पर हमलावर है। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने सोमवार (6 जुलाई) को एक लंबा पोस्ट कर विश्व हिंदू परिषद को घेरा है।

उन्होंने कहा कि चोरी मामले में विपक्षी नेताओं पर हमला करने वाला बीएचपी का लेटर उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत जैसा है। केसी वेणुगोपाल ने अपनी पोस्ट में आगे कहा कि आखिरकार मंदिर ट्रस्ट का गठन पीएम मोदी ने किया था। ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, वीएचपी के उपाध्यक्ष और आरएसएस प्रचारक भी हैं।

करूर भगदड़ मामले में डीएमके की सुप्रीम कोर्ट में याचिका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। करूर भगदड़ मामले में सुप्रीम कोर्ट जल्द सुनवाई की मांग की गई है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट मंगलवार को सुनवाई करेगा। याचिकाकर्ता के वकील ने कोर्ट को बताया कि टीवीके के कुछ मंत्री, जो इस मामले में आरोपी हैं कथित तौर पर गवाहों को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं।

वकील ने कहा कि इस मामले की सीबीआई जांच सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के तहत चल रही है इसलिए गवाहों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। वकील ने मामले की तत्काल सुनवाई की मांग की है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने याचिका पर मंगलवार को सुनवाई करने पर सहमति जताई है। बता दें कि करूर भगदड़ मामले में DMK ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है और मुख्यमंत्री विजय और मंत्रियों की बयानबाजी रोकने की मांग की है। इसके साथ ही खुद को पक्षकार बनाने की भी मांग की गई है। द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के संगठन सचिव आरएस भारती ने करूर भगदड़ मामले में सुप्रीम कोर्ट में एक अर्जी दाखिल कर खुद को पक्षकार बनाए जाने की मांग की है। उन्होंने कोर्ट से अनुरोध किया है कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय, मंत्री आधव अर्जुन और मामले के अन्य आरोपियों को चल रही जांच पर सार्वजनिक बयान देने से रोका जाए।

भाजपा को हराने में तेजस्वी मदद करें : प्रशांत

जनसुराज प्रमुख ने बांकीपुर विस उपचुनाव के लिए तेजस्वी से बोले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बांकीपुर उपचुनाव में जन सुराज के प्रशांत किशोर ने बीजेपी के गढ़ को भेदने के लिए एक बड़ा राजनीतिक दांव चलते हुए तेजस्वी यादव के महागठबंधन से समर्थन मांगा है। उन्होंने जाति-धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर, बिहार में बदलाव के लिए अपने पक्ष में वोट करने की अपील की है।

बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट पर होने जा रहे उपचुनाव ने राज्य के सियासी पारे को बढ़ा दिया है। जन सुराज पार्टी की ओर से खुद को उम्मीदवार घोषित किए जाने के बाद प्रशांत किशोर ने एक बड़ा राजनीतिक दांव खेला है। चुनावी मैदान में उतरते ही उन्होंने विपक्षी महागठबंधन (आरजेडी और कांग्रेस) के सामने दोस्ती का हाथ बढ़ाया है। प्रशांत किशोर ने खुले मंच से तेजस्वी यादव और उनके सहयोगी दलों से मदद की गुहार लगाई है।

उन्होंने गठबंधन से अनुरोध किया है कि वे इस चुनाव में जाति और मजहब के पुराने बंधनों को तोड़कर जन सुराज का साथ दें।बांकीपुर सीट से अपनी उम्मीदवारी तय होने के बाद प्रशांत किशोर काफी भावुक नजर आए। उन्होंने कहा कि पिछले चार सालों से जन सुराज ही उनकी जिंदगी, उनका घर और एकमात्र मिशन रहा है। पार्टी ने उन्हें जो जिम्मेदारी दी है, वे उसे पूरा करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देंगे। पीके ने दावा किया कि यदि बांकीपुर की जनता का आशीर्वाद उन्हें मिला, तो वे यह चुनाव जरूर जीतेंगे। इससे उनकी पार्टी का हौसला बढ़ेगा और बिहार में बदलाव की शुरुआत होगी। बांकीपुर सीट को पारंपरिक रूप से बीजेपी का मजबूत गढ़ माना जाता है।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in ।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा